Scanned by CamScanner

लगे तो मैं उनको पत्र लिख दूँ ? और यह भी कहा कि मुझे अनुभव हो रहा है कि आप का हमारा यह अन्तिम ही दरस-परस है, इसलिए आओ फिर अच्छी तरह से मिल लें। तुम घबड़ाना नहीं तुम्हें अब संसारी बन्धन न होगा, केवल एक ही बार फिर जन्म लेना होगा, उसके बाद तुम चौरासी के चक्कर में न पड़ कर मोक्ष पा जाओगे। कारण कि भगवत् चरित्रों के श्रवण मनन से जीव संसारी बन्धनों से सदा के लिये छूट कर भगवान के नित्य धाम का अधिकारी बन कर चौरासी के चक्कर से भी बच जाता है।

पाठको! श्री सिद्धकिशोरी जी की मधुर सान्त्वनापूर्ण वाणी को सुनकर मैं बड़ा ही प्रसन्न हुआ। मैंने प्रार्थना की, मेरी प्यारी लाड़ली बहिन। आहा! मैं कितना भाग्यशाली हूँ आप की मुझ पर कितनी अपार कृपा है, मैं आपका इतना स्नेह-भाजन बन सकूँगा, मुझे स्वप्न में भी इसका भान और अनुमान न था; आप की इस अहैतुकी कृपा के स्मरण करते मात्र मेरे सम्पूर्ण शरीर में रोमाञ्च हो जाता है, नेत्रों से झर-झर आँसू बहने लग जाते हैं, और मेरी वाणी रुक जाती है। बहिन! मैं तो आपके चरणों को छोड़ कर अब कहीं भी जाना नहीं चाहता, और न ही मोक्ष की मुझे चाहना है। मैं तो केवल आप से यही भिक्षा माँगता हूँ कि मेरा मन अब आप के तथा बहनोई श्री राम जी के चरणों की भक्ति छोड़ कर न कहीं आये न जाये, निरन्तर आपके श्री युगल चरणों का भ्रमर की भाँति रसास्वादन करता रहे। बहिन! जिन्हें बन्धन से छूटने की इच्छा हो आप उन्हें भले ही मोक्ष दें, मैं तो सदा आप के चरणकमलों के बन्धन में ही बँधा रहना चाहता हूँ। इधर जब आपके श्री चरणों से बँध गया तब तो उधर संसार से स्वतः ही अलग हो जाऊँगा। आप के मनुष्यवत् चरित्रों

Scanned by CamScanner

को देख-सुन कर अज्ञानी लोग भले ही आपके यथार्थरूप को भूल जायँ, किन्तु मैं अब आप को कैसे भूल सकता हूँ। आप ने तो मेरे ऊपर अत्यन्त अनुग्रह करके अपना भइया ही बना लिया है। आहा! आप के चरित्रों में कितना कौतूहल एवं प्रेम भरा रहता है, उनकी याद आते ही मेरा मन मुग्ध हो जाता है।

आप की इतनी असीम कृपा के बोझ से मैं तो दबा जा रहा हूँ। अब मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि मुझे अपना कर अपने चरणों से कभी न्यारा न करना।

पाठको! भगवान तो जीव के लिये वही करते हैं जिसमें उसका भला हो, उसका कल्याण एवं अभ्युदय हो, और वे जिससे जो भी कराना चाहते हैं तब वह भी वही करने को विवश हो जाता है।

एक दिन श्री किशोरी जी का संकेत पाकर श्री राम जी ने भी मुझे अपने स्थान को प्रस्थान करने के लिये बाध्य किया। मेरा मन श्री युगल सरकार के चरणों को छोड़ कर अब कहीं जाने की इच्छा नहीं करता था, मुझे यह सुन कर भारी दुःख हुआ, और रंज के मारे मेरा चेहरा भी कुम्हला गया। मुझे दुखी देख कर श्री किशोरी जी का हृदय भी भर आया, क्यों न हो! बहिन का हृदय ही तो ठहरा, जो तनिक देर में पसीज जाता है। थोड़ी देर के बाद बहिन बोलीं। भैया! आप किस विचार सागर में पड़े हैं, आप स्थान जाने का नाम सुनते ही दुखी क्यों हो गये? मेरा निवेदन था कि आपने मुझे संयोग सुख का आस्वादन कराया, चार महीने आमोद-प्रमोद में व्यतीत हो गये जिनका कुछ पता भी न चला, अब बरबस अपने श्री चरणों से न्यारा कर मुझे स्थान में क्यों भेज रही हैं? कृपया आप ही बतावें, कि जब आपके बिछोह का एक-एक क्षण भारी

प्रतीत होगा, तब मेरी क्या दशा होगी ? श्री किशोरी जी का कथन था, कि मिलन, विछोह के लिये ही तो होता है, काल की ऐसी कुटिल गति है कि वह प्रेमियों को इकट्ठा रहने ही नहीं देता। धैर्य्यवान पुरुष महान कष्टों के पड़ने पर भी धैर्य्य का परित्याग नहीं करते। भैया ! आप तो राजकुमार हो, हमारा वचन मान कर स्थान में जाओ और श्री गुरु महाराज का दर्शन करके उनकी ही सेवा में लग जाओ। आप इस चिन्ता को भी मन से हटा दो, श्री गुरु महाराज आप से रंज न होकर अधिक प्रसन्न होंगे। और यदि इस समय आप वहाँ न गये तो उनको भारी दुख होगा; एवं आप के लिये भी अमंगल होगा। इतना कह कर श्री किशोरी जी ने ज्यों ही मेरे सिर पर अपना हस्त-कमल फेरते हुये मेरी गोदी में बैठ कर मुझे पुचकारा और अपने वस्त्र से मेरे आँसुओं को पोंछा तो मेरे दुखी मन में तुरन्त यह सूझ उत्पन्न हुई, कि जो भगवान चींटी के पाँव की भी आहट सुन लेते हैं, तब उनसे क्या दूर है, वह तो मेरी करुण पुकार को भी अवश्य सुन ही लेंगे, फिर मुझे किस बात का डर है। इतना ज्ञान होते ही मेरे मनो-विचार बदल गये, मैंने तुरन्त श्री युगल सरकार के श्री चरणों में सादर सप्रेम अन्तिम दण्डवत् प्रणाम किया, उनके चरणों की धूलि (रज) को अपने सीस पर रख उनकी आज्ञा पालनार्थ स्थान के लिये प्रस्थान करने का साहस कर ही तो डाला। इधर मैं बिदा हो कर स्थान जाने के लिये चल तो दिया, किन्तु मेरे हृदय में वियोग रूपी अग्नि की चिनगारी मेरे बहनोई (श्री रामजी) द्वारा लगाई हुई मार्ग में सुलग उठी और बहिन की याद आते ही मेरे मन में एक वेदना उठी। मेरा मन उस समय (श्री रामजी) से कुछ रुष्ट होकर अपने हृदय उद्गार का दिग्दर्शन इस प्रकार से कराने लगा। बहनोई ! मेरा तो जीवन

Scanned by CamScanner

संकट ग्रस्त हो रहा है, श्री किशोरी जी के वियोग की अग्नि मुझे जला रही है। प्यारे अब आप भी मुझे बहुत मत तरसाओ, अधिक मत खिझावो। क्या आप मुझे कसौटी पर कस रहे हैं? इस प्रकार तड़पाने में यदि आपको कुछ गौरव एवं सुख मिलता हो तो हर्ष से तड़पाओ, सताओ, कोई चिन्ता नहीं। मेरे अन्तर में चलने वाले तूफ़ान को तो कभी न कभी आप पहिचानोगे ही!

प्यारी बहिन का जब से हुआ बिछोह, दिल ही बेकरार हो बैठा
न है भूख प्यास, जीने से भी हाथ धो बैठा"
"एक बार जो दर्शन सिद्धकिशोरी तेरा पा जाऊँ
तो इसमें शक नहीं कि मरता हुआ भी जी जाऊँ"

बहनोई! मृगतृष्णा की भाँति रंग बिरंगे जाल बिन कर अपने साले लक्ष्मीनिधि को कब तक भुलावे देते रहोगे?

प्रीतम तुमने ही किया जब साले से किनारा।
तुम बिन कौन है फिर दुनिया में हमारा॥
अजब तेरा क़ानून देखा रघुराया।
अपने सार पर भी नहीं है तुम्हारी दाया॥
प्यारे एक रोज़ का रोना हो तो रो कर सब्र आये।
पर रोज़ के रोने को कहाँ से जिगर आये॥
प्यारे बहनोई तेरे प्रेम में दीवाना हूँ मैं।
हर वक्त मधुर मुस्कान का मस्ताना हूँ मैं॥
कभी तू मुझको है राजकुमार बनाता।
कभी तू है मुझ को ज़ार ज़ार रुलाता॥
चरणों में अर्पित हैं इसे चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो सार है तुम्हारा, ठुकरा दो चाहे दुलार करो॥

पाठको! क्या कहूँ। मुझे स्थान जाते समय सरकारी बिछोह के दुख दर्द के साथ-साथ यह भी भारी खटका था, कि कहीं श्री

Scanned by CamScanner

गुरुदेव मुझसे रुष्ट न हो जायँ कि तुमने अपनी दास भावना का परित्याग करके राजकुमार का शृङ्गार करते हुये बहिन-बहनोई की भावना का नाता भी क्यों जोड़ा ? किन्तु स्थान पहुँचने पर यह तो मेरा केवल भ्रम ही भ्रम निकला। श्री गुरु महाराज मुझे देखते ही खिल उठे और अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुये प्रेम से बोले, भैया ! तुम भले आये। बेटा ! आज मैं तुम्हारी ही याद कर रहा था कि तुम आ गये। कई सन्तों द्वारा तुम्हारी श्री रामजी के प्रति सार-बहनोई एवं श्री किशोरी जी के प्रति बहिन-भैया की भावना को सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। तुम पर तो श्री सीताराम जी महाराज की पूर्ण कृपा है। उन्होंने तुमको संसारी नातों से विमुख करके दिव्य नाता के द्वारा ही तुमको अपने सम्मुख किया है। अहा ! जगत-जननी श्री जानकी जी जिसकी बहिन हों एवं जगतपिता श्री रामजी जिसके बहनोई, तब तो उसके भाग्य का क्या कहना। वास्तव में बेटा तुम बड़े ही भाग्यवान हो तुमको भगवान चिरंजीवि रखें। देखा ! प्रभु अपने आश्रितों एवं सेवकों का कितना ध्यान रखते हैं। अपने अकिंचन किंकरों पर कितनी कृपा करते हैं। अब यदि तुम अपना हित एवं कल्याण चाहते हो तो आज से अपनी इस दिव्य भावना का कभी भूल से भी परित्याग करने का दिल में ध्यान न लाना, और अपने मन को भी कभी श्री युगल सरकार के चरणों से चलायमान न करना। यद्यपि मैं अस्वस्थ होने के कारण श्री जानकीकुण्ड में पधारे हुए तुम्हारे बहिन-बहनोई (श्री सीताराम जी) का शुभ दर्शन उस समय प्राप्त न कर सका था, परन्तु कई सन्तों द्वारा उनके शील-स्नेह-युक्त स्वभाव, उनकी दयालुता एवं उदारता की प्रशंसा तो सुन ही चुका हूँ। उनको केवल बालक ही समझना सरासर भूल और अज्ञानता है। तुम उनको साक्षात प्रभु का आवेशावतार

Scanned by CamScanner

ही समझना। तुम बड़भागी हो, जो उनकी सेवा एवं दर्शनों का परम लाभ तुमको प्राप्त हुआ। ऐसे ही लीलाबिहारी स्वरूपों के दर्शनों एवं उनके चरित्रों के मनन करने से विश्वासी श्रद्धालु प्रेमीजनों के समस्त पाप ताप नष्ट हो जाते हैं। यह सब साधना द्वारा नहीं, किन्तु उनकी अपार दया व कृपा दृष्टि से ही हुआ करते हैं। तुम आजन्म लीलास्वरूपों को ही अपना इष्टदेव मानकर सब भेदभाव को त्याग उनके ही पाद पद्मों की उपासना करके, उन्हीं को दण्डवत प्रणाम करना एवं उन्हीं को सब कुछ समझना। उन्हीं की भक्ति करते हुए उन्हीं की कृपा की बाट जोहते रहना। उन्हीं की कृपा द्वारा तुम्हारा अभ्युदय एव कल्याण भी है। और यह याद रखना कि लीलास्वरूपों में तथा श्री मन्दिर की मूर्तियों में कोई भी अन्तर नहीं होता।

प्रेम-पत्र

स्वति श्री श्री बहिन मम हे सीते सुकुमारि।
यहाँ कुशल मंगल सकल चाहिये कुशल तुम्हारि॥
तुम्हरे कर कमलन लिख्यो पत्र मिल्यो बड़-भाग।
समाचार जाने सकल पढ़ि उमग्यो अनुराग॥
मात-पिता नित प्रति तुमहिं सुमिरत बारम्बार।
जनक नगर के लोग सब गावत चरित तुम्हार॥
तुम्हें बुलावन हित कहे नित माता अकुलाय।
राज काज में फँस रह्यो मैं ही सक्यों न आय॥
पिता विदेह विदेह हैं, सोइ सोइ कछु गुण मोर।
याही सों मेरो भयो यह अपराध न थोड़॥
अब मैं बेग ही आइहों सकल समाज सजाइ।
धीरज धारो लाड़ली, लैहों तुरत लेवाइ॥

आपका ही प्रिय भइया— लक्ष्मीनिधि।

स्वस्ति श्री प्रिय वत्स मम लक्ष्मीनिधि शुभ नाम।
मंगल मय शुभ आशिषी जेहिं पूरहिं सब काम॥
यहाँ कुशल सब भाँति हम पुरजन सहित सुहाय।
तत्र कुशल सिय लाड़ली सहित सखिन समुदाय॥
जब से तुम इतते गये तब तें सुधि नहिं पाइ।
सकल कुमारी मिलन को मन ही चहें अधिकाय॥
कोटि कल्प सम पलक मम प्रिय पुत्री बिनु जाय।
बेगि ले आइय वत्सवर अधिक न देर लगाय॥
श्री चक्रवर्ती महाराज सों पुनि पुनि कहब निहोर।
शीघ्र, शीघ्र अति शीघ्र ही कुँवरि भेजिये मोरि॥
अर्ध अषाढ़ विगत भये लीची अन्त जनाय।
बम्बइया हूं आम अब चौथापन दरसाय॥
कृष्ण भोग मालदा आदि सब जोहत लली की राह।
कब आवें प्रिय लाड़ली सबके चित्त यहि चाह॥
अब विलम्ब जनि कीजिय प्रियवर पुत्र सुजान।
प्रिय पाहुन हूँ से कहब मेरे मन अरमान॥
हस्ताक्षर– श्री मिथिलेश जू।

श्रीमद् दिव्य अनन्त गुण भूषित सद्गुण अयन।
पूज्य पिता युग पद कमल सीस धारूँ निज नयन॥
यहाँ कुशल हम सब विधि सकल बहिन के संग।
बहनोई हूँ कुशल सब सहित सप्रेम उमङ्ग॥
कृपापत्र तव पाइके उर में सुख न समाय।
बहिन बहनोई सकल पढ़ि पढ़ि हृदय लगाय॥
बहनोई के प्रेम में मो मन भयो लवलीन।
जिमि अगाध निधि वारि से विलग होत नहीं मीन॥
दिवस पंच-दस विगत करि चारों बहिनी संग।
ले आइब बहनोई चारन कों सहित अधिक उमंग॥
आपका प्रिय पुत्र—लक्ष्मीनिधि।

Scanned by CamScanner

❀ श्रृंगार विसर्जन ❀

(६५) पाठको ! जिस समय श्री सिद्धकिशोरी जी की आयु लगभग १५ वर्ष की हुई तो एक दिन श्री पुजारी जी ने उनसे प्रार्थनापूर्वक अपने हृदय का अभिप्राय प्रकट किया । सरकार ! आपने अपने अलौकिक, चमत्कृत चरित्रों एवं झाँकियों द्वारा सात वर्ष तक आनन्द की वर्षा करते हुये हमको भी अत्यन्त सुखी करके पूर्ण मनोरथ किया है । अब आप सयानी हो गई हैं । इसलिये हमारा विचार है कि कोई शुभ मुहूर्त सोध कर आपका शृंगार विसर्जन करके अन्तिम आरती की विधि करते हुये आपके ही द्वारा आपके प्रतिनिधि स्वरूप श्री युगल सरकार का निर्माण होकर आवाहन भी हो जाय । उसके पश्चात् आप कुछ दिनों के लिये अपने ग्राम माणीपुर में जाकर अपनी पूज्य माता की सेवा करके उनको सुख दें । क्योंकि अपनी माता जी के प्रति बेटे का यही पुनीत कर्तव्य है । बस ! इतना सुनते ही श्री किशोरी जू ने तुरन्त जवाब दिया कि न वह हमारी माता हैं, और न ही हम उनके बेटा । आप ही उनके बेटे हैं । आप को ही आजन्म उनकी सेवा करनी पड़ेगी । पुजारी जी का निवेदन था "सरकार ! हम उनके बेटे कहाँ हैं, हम तो उनके गुरु हैं । आप ही उनके बेटे हैं, और वह आपकी माता जी, आपका धर्म उनकी सेवा करना है । फिर भी श्री किशोरी जी ने कहा कि हम किसी के बेटे नहीं हैं, हम तो बेटी (श्री किशोरी जी) हैं । श्री विदेहराज श्री जनक जी महाराज तो हमारे पूज्य पिता जी हैं. एवं श्री सुनयना अम्बा जू हमारी प्रिय माता

Scanned by CamScanner

जी हैं।। हमारा घर श्री जनकपुर में है, अब हम यहाँ से भी जल्दी चली जायँगी।

अबकी बार साहस करते हुये श्री पुजारी जी ने जब उनसे पूछा कि आप यह क्या कह रही हैं? आप कहाँ चली जायेंगी? और कब कहाँ जाने का विचार कर रही हैं? श्री किशोरी जी ने प्रथम तो अपने नेत्रों द्वारा एवं अँगुली से भी ऊपर की तरफ़ संकेत करते हुये यह भी कहा कि रथयात्रा के कुछ ही दिन बाद हम अपने घर चली जायेंगी, और फिर यहाँ नहीं आयेंगी। इस वार्तालाप के तीसरे ही दिन युगल सरकार की अन्तिम झाँकी हुई, तो उसी दिन श्री सिद्धकिशोरी जी शृंगारस्वरूप में ही रोगशय्या में जाकर सो गईं। और श्री महाराज जी से कहने लगीं अभी कुछ देर है, हमारी अन्तिम विसर्जन आरती को अभी स्थगित रक्खा जाय, जब शुभ मुहूर्त होगा, तब मैं स्वयं बता दूँगी। श्री किशोरी जू ने थोड़ी देर के बाद श्री रामचन्द्र दास जी (स्वयंपाकी) को अपने समीप बुला कर कहा अब हम यहाँ अधिक न रहेंगे, अपने घर साकेतधाम को चली जायेंगी, आप स्थान में जाकर वहाँ से अपना आसन और पूजा ले आकर कुछ दिन हमारी अन्तिम सेवा भी कर लें। स्वयंपाकी जी महाराज का कथन है कि मैं उनके कई अद्भुत चरित्रों से प्रभावित हो चुका था, मेरी इनमें अटूट श्रद्धा भी थी, इसीलिये मैं तुरन्त अपना आसन ला कर उनकी सेवा में लग गया। मैंने कभी न तो नल का जल पिया था और न ही किसी के हाथ का भोजन किया था। परन्तु श्री किशोरी जू के प्रेमवश और इस ख्याल से कि इनकी सेवा में किसी प्रकार की त्रुटि न हो जाय, इसलिये "आपत्ति काले मर्यादा नास्ति" के अनुसार मैंने अपना भजन पूजा पाठ छोड़ दिया, नल का जल

Scanned by CamScanner

भी पिया, एवं साधुओं द्वारा बनाया हुआ भोजन भी पाने लगा ! तभी तो किशोरी जी ने मुझे अन्तिम आशीर्वाद दिया था कि आपने हमारी बड़ी सेवा की है इसलिए अब आप की लीलाविहारी स्वरूपों में निरन्तर श्रद्धा बनी रहेगी। स्वयंपाकी जी का कथन है कि एक बार श्री किशोरी जी ने मुझे अन्तिम बीमारी के तीन चार दिन पहले कहा था कि मैं आषाढ़ शुक्ल नवमी को अवश्य यहाँ से साकेत चली जाऊँगी, इसलिये गुरु महाराज को तार द्वारा भावल से बुलवाया जाय अब वह यहाँ आकर अन्तिम आरती करके हमारे स्वरूप को सरयू जी में विसर्जन कर दें; इधर पं० दुर्गादत्त जी को भी आषाढ़ शुदी पञ्चिमी के दिन बाध्य किया कि हमको आज फैजाबाद से श्री अयोध्या जी ले चलो; हमको वहाँ एक अति आवश्यक कार्य करना है और नवमी को उसका अच्छा मुहूर्त है। उनका आदेश पाते ही तुरन्त डिप्टी साहेब उनको श्री अयोध्या जी बिहौती-भवन में ले आये; और उधर सप्तमी को पुजारी जी भावल से आ गये। श्री पुजारी जी का कथन है, कि श्री सिद्धकिशोरी जी का सप्तमी को मैंने दर्शन किया; उस समय कोई अमांगलिक चिन्ह उनके शरीर में दिखाई न पड़ता था, बल्कि उनके मुखार-विन्द पर प्रसन्नता एवं दिव्य तेज ही छाया हुआ नजर आता था; बहुत दिनों के बाद अपने घर जाने की जैसे किसी को प्रसन्नता होती है, ठीक उस समय ऐसा ही प्रतीत हो रहा था एवं उनके मुखमंडल पर खुशी की रेखायें झलक रही थी।

इधर श्री किशोरी जी की बीमारी का समाचार पाकर स्थानीय एवं बाहरी श्रद्धालु प्रेमीजन और अच्छे-अच्छे संत महन्त भी इनके अन्तिम दर्शनार्थ एकत्रित होने लगे; उस समय श्री किशोरी जू अपनी सुधामई दृष्टि के अवलोकन मात्र से आगन्तुक प्रेमीजनों के हृदयों को सींचने लगीं; ताकि लोग

Scanned by CamScanner

कुम्हला न जायँ, एवं अपने श्रवण सुखद वचनों द्वारा प्रेमी जनों को रोता देख कर मृदुहास्य करके कृपासहित उनके मस्तक को अपने हस्तकमलों से स्पर्श करती हुई उनके हार्दिक शोक सन्ताप को दूर कर देती थीं। तथा अपने वचनामृत को नये-नये भावों के प्याले में भर-भर कर सब को पिलातीं और आश्वासन के साथ-साथ उपदेश भी दिया करतीं थीं।

उपदेश

(१) सुख-दुख, जन्म-मरण, छाया की भाँति जीवों के पीछे-पीछे घूमा करते हैं, इन्हें कोई मना नहीं कर सकता एवं यह जीवात्मा, जो स्थूल शरीर में चोगा पहने हुये उछल कूद मचा रहा है वह यहाँ नहीं रह सकता, किसी न किसी दिन अवश्य इस शरीर को यहाँ रखकर चुपचाप चला जायगा।

(२) संसारी समस्त बन्धनों को छेदन करने में केवल भगवत् भक्ति ही समर्थ है। इसलिये आप लोग निरन्तर श्री सीताराम जी की भक्ति करते हुये दूसरे किसी देवता का अपमान भी न करें। इसी में सब का हित एवं कल्याण है।

(३) इस हाड़ मांस के शरीर में लोगों की जितनी आसक्ति है, यदि भगवान में भी कहीं इतना प्रेम हो जाय, तब तो उसका बेड़ा ही पार हो जाय। यह जीव गर्भ में प्रत्येक श्वास-श्वास पर प्रभु नाम स्मरण करने का करार कर आया है। हर एक मनुष्य के प्रतिदिन इक्कीस हजार छः सौ श्वास निकलते हैं, इसलिये हर एक मनुष्य को प्रतिदिन पचीस हजार "श्री सीताराम नाम का स्मरण तो अवश्य ही कर लेना चाहिये। अधिक हो सके तो अच्छा ही है।

(४) साधुओं को केवल भगवान का प्रसाद ही सेवन करना चाहिये, किसी सकाम गृहस्थ के घर जाकर कभी उसका भोजन

Scanned by CamScanner

न करें, कारण कि साधुरूपी गौ को सकामी पुरुष भोजनरूपी चारा देकर भजन रूपी दूध दुह लेते हैं। इसलिये साधु कोरा का कोरा रह जाता है।

(५) सत्संग एवं संत समागम भगवत्कथा यह बड़े भाग्यों से मिलता है, इस का कोटि गंगा में स्नान करने का फल होता है।

(६) किसी प्राणी को कष्ट न दे, और दयाधर्म को भी न त्यागना चाहिये। दुखी की आह बुरी होती है।

(७) संग्रह का अन्त विनाश है, इसलिये दान पुण्य करना चाहिये। अधिक ऊँचे चढ़ने का अन्त नीचे गिरना है, अभिमान मत करो। संयोग का अन्त वियोग है संसार में किसी से लिप्त न होवे। एवं जीवन का अन्त मरण है; भगवान का भजन सत्संग करो। भगवत्भजन पूर्वजन्म उपार्जित स्थूल एवं सूक्ष्म समस्त पापों को क्षण भर में भस्म करके पवित्र बना देता है।

(८) जैसे सुदृढ़ खम्भों वाला मकान बहुत काल के पश्चात् जीर्ण होने पर नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार मनुष्य भी जरा जीर्ण होकर मृत्यु के आधीन हो नष्ट हो जाता है। और जिस प्रकार समुद्र में बहते हुये २ लक्कड़ एक दूसरे से मिल कर फिर विलग हो जाते हैं, उसी प्रकार कालयोग से मनुष्यों का भी एक दूसरे के साथ संयोग-वियोग होता रहता है। और उसी प्रकार स्त्री, पुत्र, भाई-बन्धु एवं धन इत्यादि भी यह सब, कुछ काल के लिये इकट्ठे होते और फिर दूसरी जगह चले जाते हैं। इसलिये इनका शोक, चिन्ता करना भी व्यर्थ है।

(९) जिस प्रकार जीवों के शरीर उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं। याद रखो, इस प्रकार आत्मा का जन्म एवं मरण कभी नहीं होता। आत्मा अमर है, केवल शरीर ही नष्ट हो जाता है।

Scanned by CamScanner

(१०) भगवान की प्रत्येक लीला में श्रद्धा और विश्वास का होना जरूरी है। किसी की निन्दा न करनी चाहिये। भावना और विश्वास के अनुकूल ही फल भी मिला करता है।

आदमी वह है मुसीबत से जो परेशान न हो।
कोई मुश्किल नहीं ऐसी कि जो आसान न हो॥

(११) गृहस्थ की स्त्री घर के सब लोगों की सेवा टहल तो कर देती है, किन्तु अपने स्वामी (पति) को छोड़कर दूसरे किसी के साथ सोती नहीं है। इसी प्रकार सब धर्मों का आदर करो, परन्तु अपने मन को अपनी ही धर्मनिष्ठा से तृप्त करो, इसी को दृढ़ उपासना कहते हैं।

(१२) "काल, कर्म, गुण, स्वभाव सबके सीस तपत" संसार में ऐसा कौन जीवधारी है, जिससे कभी कोई अपराध न हुआ हो। भले, बुरे, सज्जन, दुर्जन, मूर्ख, पंडित, सभी से कुछ न कुछ प्रकृतिवश अपराध बन ही जाता है। इसलिये अपराधी मनुष्य से घृणा न करके क्षमा ही करना उचित है।

(१३) मन, वचन, कर्म से किसी भी जीव का अहित न करो, किसी के मन को मत दुखाओ, सबका भला चाहो, भला करो तो भगवान तुम्हारा भी भला करेंगे। अपना अहित करके भी दूसरों का हित करो।

बीमारी के अन्तिम समय आप अपनी दोनों आँखें मूँद कर शान्त भाव से जब अपने बिस्तरे पर पड़ी रहती थीं। तो मालूम होता था कि आप पड़े-पड़े किसी का ध्यान एवं स्मरण भजन कर रही हैं। हालत पूछने पर आप सबको कह देती थीं कि हम अच्छी हैं, सब आनन्द है, हमें कोई कष्ट नहीं है। श्री पुजारी जी का कथन है कि अंत में जब मुझे भारी बेचैनी और घबराहट होने लगी, तो श्री किशोरी जी ने मुझे अकस्मात श्रृङ्गार

Scanned by CamScanner

युक्त दर्शन दिया, उस समय इतना प्रकाश हुआ कि मेरी आँखें चौंधिया गईं और मैं बेहोश हो गया। उनके विशाल एवं भोले भाले मुखड़े पर दिव्य तेज हीरा की भाँति प्रकाशमान नजर आता था। मेरे कानों में उस समय एक धीमी आवाज भी आई। महाराज जी ! घबराओ नहीं, हम आपसे दूर नहीं हैं। इतना कहते-कहते फिर वही पहिला स्वरूप धारण कर हमसे मचल कर कहने लगीं कि हम कल रात्रि के समय अवश्य साकेत लोक जायँगी, अब इसमें कोई रोक टोक न करें।

कई प्रेमी सेवक दिन रात इनकी देख रेख एवं सेवा चिकित्सा में लगे रहते थे, परन्तु इस लोक-चिकित्सा से क्या होना था। इनको तो अपने घर (साकेत लोक) में जाने की धुन सवार थी, आप ने कई दिन तक तो भोजन न करके नित्य प्रति श्री अयोध्या जी के कई मन्दिरों से केवल भगवान का चरणामृत ही साधुओं द्वारा मँगवा-मँगवा कर पान किया था। कई डाक्टर, वैद्य एवं हकीम आते, अपनी-अपनी औषधि देते, तो औषधि सेवन करते ही आपका बुखार भी अच्छा हो जाता, मगर फिर दूसरे दिन १०४ डिगरी तक पहुँच जाता। आप अपने दयालु उदार स्वभावानुकूल अन्तिम समय भी प्रेमीजनों को अपनी सेवा द्वारा कृतार्थ करने का शुभ अवसर प्रदान कर रही थीं। किसी प्रेमी तथा वैद्य का निरादर न हो जाय, इसलिये उन सबकी सेवा को स्वीकार करने के निमित्त ही तो आप देरी भी कर रही थीं, यह भी आप की एक लीला थी।

चेतावनी

पाठको ! इस जीवन का कोई ठिकाना या अवधि नहीं है; किसकी किस दिन किस समय समाप्ति होगी, इस बात को कोई नहीं जानता, और न कोई बता ही सकता है। परन्तु हाँ प्रकृति का

Scanned by CamScanner

यह नियम है कि भगवान के अनन्य भक्त तथा सिद्ध महान पुरुषों को भविष्य की बातों का आसार पहिले से ही प्रकट होने लग जाता है। प्रारब्ध प्रारम्भ में ही अपने कार्यों की सूचना उन्हें दे देती है, इसलिये भगवतकृपा एवं भजन के प्रताप से वह कुछ अनुभव कर लेते हैं। कई लीलास्वरूप एवं सिद्ध महान पुरुष इस भारतभूमि में हो चुके हैं और अब भी हैं जिनको पहिले से ही कुछ न कुछ अनुभव हो जाया करता है।

मनुष्य बड़ी-बड़ी आशाओं से किसी काम को अपने हाथ में लेता है परन्तु इस कराल काल की विचित्र ही गति है। वह क्षण मात्र में उसकी सब आशाओं पर पानी फेर देता है। सभी सहायक और कुटुम्बी मुँह ताकते रह जाते हैं, बड़े-बड़े वैद्य, हकीम एवं डाक्टरों की बहुमूल्य औषधियाँ धरी ही रह जाती हैं, और जाने वाला पलक भर में काल के कराल गाल में जा पहुँचता है; उस समय किसी का भी कोई वश नहीं चलता। इसलिये और किसी बात पर लोगों को विश्वास न हो; परन्तु "एक दिन मरना जरूर है।" इस बात को तो सभी धर्म वाले एवं सभी वर्ण के लोग बिना किसी आनाकानी के सच मान ही लेते हैं। इसमें शंका किसी को भी नहीं रहती, और शंका रहे भी कैसे, जिसने जन्म लिया है उनका मरण भी उतना सत्य है जितना कि सूर्य का प्रतिदिन पूर्व में उदय होना।

"As the sun rises in the East daily."

सज्जनो! भगवान की लीला कुछ अनोखी एवं विचित्र ही है, वे कब क्या और क्यों करते हैं। हम जैसे तुच्छ जीव उस लीलामय प्रभु के सम्बन्ध में भला क्या जान सकते हैं? अभी क्षण भर के बाद क्या होगा, कौन सी विचित्र घटना कहाँ पर होगी, कब और कहाँ क्या-क्या परिवर्तन होगा, इन सब बातों को

Scanned by CamScanner

तो प्रभु ही जानते हैं। यदि हमारे सामने कोई सुन्दर चीज आ जाय तो हम तुरन्त खुश हो जाते हैं, अगर चली जाय तो झट उदास हो जाते हैं, वह मनोरम वस्तु कहाँ से चली आई, और कहाँ चली गई, इसको हम नहीं जान पाते। प्रभु के समस्त विधान जानने में हम लोग असमर्थ रहते हैं ; भगवान की इस क्रीड़ा ने संसार को विमोहित कर रक्खा है ! सज्जनो ! हम आप सभी उनके आदेशानुसार ही यहाँ आये हैं और जब उनकी आज्ञा होगी, चले भी जायेगें।

"लाई हयात आये, कज़ा ले चली चले,
न अपनी खुशी आये, न अपनी खुशी चले !"

भगवान की शक्ति विशेषरूप से भी जो कोई यहाँ मृत्यु लोक में आते हैं उन्हें भी जब प्रभु चाहें अपने पास बुला लेते हैं। जब उनका कार्य पूरा हो जाता है, तो वह सब तरफ़ से चित्त को हटा कर अपने निजी गृह (दिव्य-धाम) में चलने के लिये व्याकुल हो उठते हैं, तब तो उन्हें यहाँ एक क्षण भर रहना भी कठिन हो जाता है।

दैव की कैसी विलक्षण क्रीड़ा एवं प्रारब्ध की कैसी विचित्र लीला है, कि जिन से हम एक पल भी पृथक होना नहीं चाहते, किन्तु वह हमें हठात् छोड़ कर सदा के लिये चले जाते हैं; और जिन के पास हम क्षण भर भी रहना नहीं चाहते उनके साथ आयु भर रहना पड़ता है। एवं जिनको हम समीप में रखना चाहते हैं वह हजारों कोस हमसे दूर रहते हैं, और जिन से हमेशा हम दूर ही रहना चाहते हैं वह रात दिन हमारी छाती पर मूँग दला करते हैं। सज्जनो ! प्रिय संयोग में वियोग भी छिपा रहता है, वह कहीं से आता नहीं है। यदि विधि का बलवान विधान अनिवार्य न होता, तो कौन प्रियतम से पृथक

Scanned by CamScanner

होने की इच्छा करता ? किन्तु विधाता ने तो संयोग के साथ ही वियोग को भी बाँध दिया है, और जन्म के साथ पीछे मृत्यु ही सटी है। सुख के साथ दुख भी जुटा हुआ है, इसलिये प्राणी सभी कर्म करने में विवश हैं; मरना जीना यह तो सब प्रारब्ध के ही आधीन है, कौन किसे मारता है, यह तो सब अपने ही कर्मों के आधीन होकर जीते मरते रहते हैं। देखिये ! मनुष्य कुछ और संकल्प करता है, मगर काल उसके विपरीत ही संकल्प करता है। काल तो सदा घात में लगा रहता है, हम बेख़बर भले ही हो जायँ; परन्तु काल हमेशा सावधान रहता है। वह किसी की बात नहीं मानता; वह किसी का भी शील संकोच नहीं करता। क्षमा करना, आलस्य करना, वह सीखा ही नहीं है, आप का कितना ही बड़ा कार्य क्यों न पड़ा हो, कितना ही मनोरथ क्यों न हो, वह आप की एक भी नहीं सुनता, अपने समय से कभी नहीं चूकता। तब तो मनुष्य मृत्यु से व्यर्थ ही डरता है। जब तक मृत्यु का समय नहीं, तब तक लाख प्रयत्न करने पर भी मृत्यु आ नहीं सकती। और जिस समय उसकी आयु पूरी हो जायगी, उस समय करोड़ों उपाय करने पर भी काल से कोई बचा नहीं सकता ! हम चाहे न जानें किन्तु मृत्यु का समय निश्चित होता है, वह अपने समय पर आ जाती है; और प्राणी को पकड़ कर ले ही जाती है। जिस ने जन्म लेकर शरीर धारण किया है, उसकी मृत्यु भी अवश्य होगी। उसे कोई टाल भी नहीं सकता, भला भावी को कौन टाल सकता है? काल की गति को सज्जनो ! कोई टाल सके यह किसकी शक्ति है ? कौन किसे सुख दुःख दे सकता है ? सुख दुख के कारण को तो काल कृति ही माननी पड़ेगी। यह कालरूप भगवान कब किस से क्या कराना चाहते हैं, इसे कोई कह नहीं सकता। बड़े-बड़े विद्वान ज्ञानी, ध्यानी, मुनि और

Scanned by CamScanner

महात्मा भी काल की चेष्टाओं को यथावत् समझने में असमर्थ हैं। यह सब काल की महिमा एवं भगवान की लीला है, काल की गति प्रबल है इसे कोई मिटा नहीं सकता। कितने भी शूर-वीर हों, कितने भी ज्ञानी, ध्यानी, तेजस्वी क्यों न हों; काल किसी का भी पक्षपात नहीं करता। जिनका जिनसे जब तक जितना, जहाँ, जैसा सम्बन्ध होगा उसका उस से तब तक उतना ही सम्बन्ध होकर रहेगा! "अनहोनी होनी नहीं, जो होनी सो होय।" जहाँ काल पूरा हुआ, तुम अपने रास्ते हम अपने रास्ते, नदी नाव संयोग वाली कहावत यहाँ भी घटती है। देखिये! नाव में जब मुसाफ़िर सवार होते हैं कितने हिलमिल कर प्रेम-पूर्वक बातें करते हैं, मगर नाव से उतरते ही कौन किसको पूछता है, सब को अपने-अपने घर जाने की सूझती है; राम-राम, श्याम-श्याम तक करना भी भूल जाते हैं।

हा! काल की कैसी कुटिल गति है; यह जीवन-मरण का कर्म अनादिकाल से लगा है एवं अनन्त काल तक लगा ही रहेगा। यह तो ऐसे ही संसार का अनादि प्रवाह चल रहा है, इसमें कौन किसका पिता कौन किसकी माता है। आज जो पिता हैं; दूसरे जन्म में पुत्र बन जाता है। यह संसार ऐसे ही उलटता पलटता रहता है। जीवित अवस्था में सभी राजे महाराजे सेवक और सम्बन्धी जिस पुरुष के शरीर का इतना मान सम्मान करते हैं, उसका अन्तिम परिणाम दो मुट्ठी ख़ाक ही होता है, यही तो संसार की असारता का एक प्रत्यक्ष दृश्य एवं प्रमाण है। कौन किस को मारता या मरवाता है, सभी का काल निश्चित होता है। उससे अधिक कोई कितना भी प्रयत्न करे, जी नहीं सकता, और उससे पहले वह चाहे विष पी ले, अग्नि में कूद पड़े, पहाड़ से भी गिर पड़े, दरिया में डूब जाये, तो भी बच ही जाते हैं। इसलिये काल की गति

Scanned by CamScanner

समझ कर शोक को दूर करना ही पड़ता है। यह संसार तो भगवान की लीलास्थली है, फिर मृत्यु है क्या वस्तु ? यह जीवन नाटक का एक नैसर्गिक परदा (ड्राप) है, जिसके हुए बिना नाटक की शोभा ही नहीं होती, आत्मा मरती नहीं; शरीर रहता नहीं, "Birth follows death", मिलना-बिछुड़ना-सम्बन्ध होना और टूटना यह तो सब इसी खेल के अंग हैं, फिर रोना धोना भी किस बात का ?

"अग जग जीव नाग नर देवा, नाथ सकल जग काल कलेवा"

भला बताइये तो सही कि विधि के विधान को व्यर्थ करने की सामर्थ्य किस में है ? पुरुषार्थ से प्रारब्ध को हटाने का साहस भी क्या कोई कर सकता है ? अजी ! विधना के लेख पर भला मेख कौन मार सकता है ? समय का प्रभाव, प्रारब्ध का चक्कर, दैव की गति, और होनहार की बात भला कौन टाल सकता है ?

भाग्य बड़ा बलवान होता है, जहाँ जिसका अन्न जल बदा होता है; उस समय वहीं जाने को उसकी बुद्धि भी वैसी ही हो जाती है। भावी उसको वहाँ खैंच ले आती है, तब आशा निराशा के रूप में बदल जाती है। संसार में स्थिर कुछ नहीं; जो जन्मा, उसकी मृत्यु अवश्य होगी। संसार के सभी संयोग-वियोग को साथ लिये जाते हैं, आत्मा अमर है, कभी मरती नहीं; अनित्य एवं क्षणभंगुर शरीर स्थाई रहता नहीं, फिर चिन्ता किस बात की। काल तो भगवान का संकेत पाते ही उसको ग्रसने के लिये खड़ा हो जाता है, चुपचाप अँगुलियों पर समय की गणना किया करता है; इसलिये इसमें दोष भी किसे दिया जाय; जो पैदा हुआ है निश्चय ही मरेगा भी, जिस समय जिसकी जहाँ मृत्यु बदी है उस समय उसी स्थान पर उसकी मृत्यु अवश्य होगी। हम उसे रोकर या शोक करके टाल नहीं सकते। आप कितना ही रोइये कि संध्या समय सूर्य अस्त न

Scanned by CamScanner

समय सूर्य अस्त न हों वह अवश्य ही अस्त होंगे, आप कितना ही माथा फोड़ें कि सूर्य पूर्व से उदय न हो किन्तु वह तो अवश्य पूर्व से ही प्रकट होंगे। इसलिये जो बात निश्चित है उसके लिये अधिक शोक करना भी व्यर्थ और भारी भूल है।

अनेक जन्मों के सम्बन्धी पृथक-पृथक स्थानों में प्रकट होते हैं, भाग्यवश फिर मिल जाते हैं, और दुःख-सुख देकर न जाने फिर कहाँ चल भी देते हैं। यह काल की गति, मृत्यु की कठोरता, यमराज की दृढ़ता, अनादिकाल से चली आई है और अनन्तकाल तक चलती भी रहेगी। इसका न कोई आदि है न अन्त, मृत्यु के लिये काल-अकाल कुछ नहीं। भावी कौन मेट सकता है, जीवन का क्या पता, अभी है क्षण भर में नहीं। इसलिये हमें इस शरीर की अनित्यता पर सदा ध्यान रखना चाहिये, "एक दिन हमें भी मरना है", इस बात की यदि मनुष्य को याद बनी रहे, तो बहुत से पापों से तो वह यों ही बच सकता है। भाइयो! मनुष्य पाप तब करता है जब मृत्यु को भुला देता है। इसलिये—

दो बातों को भूल मत, जो चाहे कल्याण।
"नारायण" एक मौत को, दूजे श्री भगवान॥

भगवान याद रहें, तब तो मृत्यु को भूल भी जायें तो कोई बात नहीं, हम तो मृत्यु और भगवान दोनों को ही भूल कर इस साढ़े तीन हाथ के शरीर को ही सत्य मानते हुये इसके पालन-पोषण में ही दिन-रात निमग्न रहते हैं।

पाठको! श्री सिद्धकिशोरी जू की इस प्रकार की लीला को देखते हुये प्रेमीजनों को अब विश्वास होने लगा, कि यह अपनी लीला के विस्तार को समेटना चाहती हैं। इसलिये सब शोक विभोर होने लगे, परन्तु कोई कर ही क्या सकता था।

Scanned by CamScanner

कई प्रेमी तो अपना तन, मन, धन अर्पण करने को तैयार बैठे थे, कई प्रेमी अपनी आयु तक दान करने को ही डटे थे, बहुत से प्रेमी तो यह चाहते थे कि हम इस संसार से चल दें और हमारे बदले में अभी श्री किशोरी जी जीवित रहें। परन्तु यह भी तो उन्हीं की लीला थी; वरना कुटिल काल की गति को रोकना भी तो उनके बायें हाथ का खेल ही था।

हाय ! किसे पता था कि काल कराल की तरफ़ से इस प्रकार भयंकर उत्पात होगा, सच है विधाता की बातें टला नहीं करतीं, "युवा-मरण अति दुःख होत" परन्तु प्रभु इच्छा में सिवाय धैर्य के किसी का वश ही क्या है? जिनके प्रत्येक कार्य में हमने सुख और आनन्द का अनुभव किया हो, वे न रहें, वे सदा के लिये किसी ऐसे लोक में चले जायें जहाँ जाकर वापस लौटने की आशा न हो, उनकी स्मृति में कितना दुःख होता है, इसे कौन जनाये। हा सज्जनो ! मुझे दुःख होता है कि मैं इस हृदय विदारक घटना का चित्रण अपनी कोमल लेखनी से किस भाँति करूँ ? यथार्थ में यह हृदय विदारक प्रसङ्ग हृदय को हिला देने वाला ही है। मेरा तो विचार यही था कि इस प्रसङ्ग को यहाँ न लिखूँ जिससे प्रेमी लोगों के हृदय में बज्राघात होकर उनके हृदय में हूक पैदा हो, पर हाय रे विधाता ! तुम पर किसी का कोई वश नहीं चलता और यदि मैं इसको यहाँ न लिखूँ तो "जीवनी" अधूरी रही जाती है, और अगर लिखूँ तो इस महान् शोकागार समाचार के लिखते ही मेरा हाथ काँपने लगता है। क्यों री जड़ लेखनी ! आज तक तूने जिनके अनेक चमत्कारी चरित्रों से रातदिन पुस्तक के पन्ने पर पन्ने चित्रित कर डाले और मुझे विश्राम तक नहीं लेने दिया, अरी क्रूर जड़ लेखनी, तू रुक क्यों नहीं जाती, तू टूट क्यों नहीं पड़ती। पाठको ! क्षमा करना, मैं इस समय लेखक धर्म से

Scanned by CamScanner

विवश होकर आपके साथ घात करने को उतारू हो रहा हूँ। आप सबके हृदय में शोक सरिता बहाते हुए सुख समूह नसाने चल रहा हूँ, आप के स्वर्गीय परमानन्द को मिट्टी में मिलाने जा रहा हूँ।

अब हम सब के सामने से श्री सिद्धकिशोरी जी अदृश्य होने वाली हैं, प्रेमी एवं दर्शकगण दर्शन कर लें। रात्रि के ग्यारह बजे थे; उस समय भी उनके शरीर से दिव्य प्रकाश निकल रहा था, आप का मुखारविन्द भी दमक रहा था। संत-जन, प्रेमीगण, दर्शक तथा सेवकगण उनके चारों ओर कुछ तो खड़े और कुछ बैठे थे, मिती आषाढ़ शु० ६ सं० १६६४ था, बस ! उसी रात को सज्जनो ! सब टुकर-टुकर ताकते ही रह गये, कि श्री किशोरी जी अपनी वाणी को विश्राम दे ऐसी मौन और शान्त हो गईं, जिस प्रकार तेल के समाप्त होते ही दीपक शान्त हो जाता है ! अर्थात् अपने करकमल द्वारा सबको अभय मुद्रा दिखाकर प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराती हुईं अपनी मानव लीला समाप्त कर नित्यलीला में प्राप्त हो गईं (इस धराधाम की यात्रा को पूर्ण कर अपने परम श्रेष्ठ स्थान श्री साकेतधाम को पयान कर गईं) कौन जानता था कि आपकी यह प्रसन्नता एवं अन्तिम मुस्कराहट सबको रुलाने के लिये है।

सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जी इस मृत्यु लोक में जीवों पर दया करने के निमित्त ही तो पधारी थीं। अब उनके चरित्रों की याद कर-कर के हृदय फटा जाता है, बहुत रोकने पर भी नेत्रों से आँसू गिरने से नहीं मानते। हायरे दुर्दैव ! तू तो बड़ा ही निर्दयी है; सचमुच विधीता तू बड़ा ही निष्ठुर है; और हम भी अभागे हैं जो श्री सिद्धकिशोरी जी की आदर्श लीला को इस लौह लेखनी से लिख रहे हैं, किन्तु अब क्या करें, किस से कहें

Scanned by CamScanner

कहाँ जायँ, किसको अपना दुखड़ा सुनावें, हम तो अमूल्य निधि (श्री किशोरी जू) को हाथ से खोकर सदा के लिये अनाथ बन गये। हायरे निर्दयी दुष्ट काल तुझे तनिक दया भी न आई, तूने अकाल में यह कार्य कर डाला। हमारी श्री किशोरी जी को भी तू दूसरों की भाँति हमसे छीन कर ले भागा।

इस अचानक विछोह के कारण सबका हृदय चूर-चूर हो गया। दुःख और निराशा छा गई, प्राणहीन शरीर को देख-देख भक्तों के हृदय में कितनी मार्मिक वेदना हुई इसकी कल्पना करना भी कठिन है। इस बज्रपात से प्रेमीजनों के कोमल हृदय पर एक गहरी चोट लगी। भला उनकी दशा का कोई क्या वर्णन कर सकता है, जिनके प्राण जीवन धन सदा के लिये उनको इस संसार में छोड़ कर चले गये। कठोर से कठोर हृदय वालों के भी अश्रुधारा बह रही थी, जो कोई भी सुनता, करुणा की ज्वाला उसके हृदय में जल उठती। उस समय की विरह दशा को देख सुनकर पाषाण हृदय भी पिघलने लगे एवं उनके विछोह में तो जनसाधारण के हृदयों में भी करुणा फूट-फूट कर बिलखने लगी।

"सुन विलाप दुखहूँ दुख लागा, धीरज हूँ कर धीरज भागा।"

बहुत से लोग तो अवाक् से बैठे हुये जहाँ-तहाँ आँसू बहाते हुये काल की असामयिक करालता को कोसने लगे। ऐसे अलौकिक एवं अनोखे संस्कारी लीलाबिहारी स्वरूप (श्री सिद्ध-किशोरी जी) के दैवी गुणों एवं चरित्रों का स्मरण सबके हृदय में हूक पैदा करने लगा। कई प्रेमीजन तो रो-रो कर अपने आँसुओं से मुँह धो हृदय की ज्वाला को शान्त करके अपने संचित पापों को धोने लगे। बस। प्रेमीजनो! ऐसा दुःखद करुण दृश्य जिसका स्मरणमात्र हृदय को हिला देता है, उसको मैं अब अधिक लिखने में असमर्थ हूँ। मेरा कलेजा विदीर्ण हुआ जाता

Scanned by CamScanner

है, दैव ने मुझे भी ठग लिया; यह अभागिनी अँखियाँ न जाने कब तक तरसती रहेंगी। मेरा हृदय शून्य होकर मेरा भविष्य भी दुखमय बन गया। हा! जब इस हृदय विदारक सम्वाद की याद आ जाती है, तो शरीर के रोंगटे खड़े होकर हृदय भी काँप जाता है। कहाँ तक कहूँ मेरी आत्मा की जलन गरम आँसुओं से किसी प्रकार से शान्त नहीं होती। बहिन! प्यारी बहिन! आप तो सबको रोता बिलखता और किसी को सोता हुआ ही छोड़ कर चली गईं; परन्तु मुझे तो तीर्थयात्रा में ही भेज-कर आप साकेत पधारीं। आप के बिना सारा संसार मुझे अब सूना प्रतीत हो रहा है। विधाता ने भारी अन्याय किया। हाय! मेरा दुलार भी न देख सका। बहिन! आपने तो अपने प्रेम से पाले भैया को भी भुला ही दिया। आप में लोककल्याण की भावना प्रबल थी, तभी तो अपनी उदारता के वशीभूत होकर जन-साधारण का भी आप ने भारी उपकार किया; आपका जनता पर भारी प्रभाव पड़ा, किन्तु इसे क्रूर निर्दयी काल सहन न कर सका।

(६६) शृंगारी रामविलास शरण जी का कथन है, एक दिन कानपुर से श्री सिद्धकिशोरी जू के अनन्य प्रेमी श्रद्धालु भक्त पं० श्री हरिदत्त जी (मित्र जी) भी इनकी बीमारी का समाचार सुनकर श्री अवध में दर्शनार्थ आये थे। श्री किशोरी जू ने तुरन्त इनको अपने समीप बुलाकर ढाढ़स देते हुये कहा था कि अब हम अच्छी हैं, आप ने हमारा दर्शन कर लिया, आप आज शाम की गाड़ी से ही कानपुर लौट जायें; कल रात को यहाँ कोई दूसरी लीला होने वाली है उस समय आप का यहाँ रहना उचित नहीं है। पाठको! पंडित जी बड़े श्रद्धालु प्रेमी एवं आज्ञाकारी थे ही इसलिये तुरन्त शाम वाली गाड़ी से लीलाधर भगवान की कुछ लीला समझ कर कानपुर चले गये।

Scanned by CamScanner

दूसरे दिन रात्रि में आप ने मानवलीला समाप्त कर दी। उन्हें क्या खबर थी कि हमारे जीवन नौका की कर्णधार दया-सागरी यहाँ से सदा के लिये चली जावेंगी। मित्रजी को जब पाँच सात दिन के बाद यह दुखद समाचार मिला तो वह अपनी छाती पर पत्थर रख कर सहन कर ही तो गये, यदि सहन न करते, तो फिर करते ही क्या ? सज्जनो ! मित्र जी मुझे भी (लेखक) एक बार कानपुर में मिले थे। श्री सिद्धकिशोरी जी की वार्तालाप चलते ही उनका वियोग उन्हें असह्य हुआ; तो वह फूट-फूट कर रोने और कहने लगे, भइया जी ! क्या कहूँ, श्री सिद्धकिशोरी जी का मुखारविन्द अत्यन्त मोहक एवं हृदय नवनीत के समान स्निग्ध स्वच्छ था; सब प्रेमीजन उनका आदर सत्कार करते थे; वह ऐसी तेजवान एवं प्रभावशाली थीं कि उनकी इच्छा के विरुद्ध कभी कोई बात ही नहीं कर सकता था, वह तो एक शान्ति की मूर्ति थीं, सरलता एवं मृदुलता में अपने ही समान थीं; उनकी हँसी में भी भारी सौन्दर्य एवं आकर्षण था, मुझे जब कभी उनके शृंगार की झाँकी याद आती है, तभी मेरी आँखें भर आती हैं, और गला रुँध जाता है। विशेष दुख तो मुझे इस बात का है, कि मैं भी आप ही की तरह धोखे-धोखे में रह गया; (आप को तो उन्हीं ने तीर्थयात्रा में भेज दिया और मुझे भी श्री अवध से वापस कानपुर भेज दिया था) तभी तो उनके अन्तिम दर्शन न कर सका।

(९७) परसनल असिस्टेन्ट श्री रुद्रदत्तसिंह जी श्री अवधराज का कथन है कि जिस समय श्री सिद्धकिशोरी जी फैजाबाद में बीमार थीं एक दिन इशारे से मुझको अपने समीप बुलाया(मँझले बबुआ इधर आइए)। जब मैं उनके समीप गया तो कहने लगीं कि अब "मैं यहाँ नहीं रहना चाहती, यहाँ से जल्दी चली जाऊँगी" मैं उनकी इस गूढ़ वाणी को न समझ सका, तब श्री पुजारी

जी को जगाया तो उन्हीं ने आकर पूछा, सरकार ! क्या बात है, कहाँ चलोगी, क्या श्री अयोध्या जी चलने की इच्छा है ? तब उत्तर दिया कि कल हमको श्री अयोध्या जी ले चलो। हमें आषाढ़ शु० ६ को वहाँ एक नई लीला करनी है। सज्जनो ! सप्तमी को तो हम लोग उनकी आज्ञानुसार उनको श्री अयोध्या जी में ले आये और नवमी को उन्होंने अपनी अन्तिम लीला ही कर दिखलाई।

अन्तिम शव निकालने से पहिले थोड़ी सी वर्षा हुई जब श्री सरयू जी के तट पर चिता बनाई, दाहकर्म के समय बड़े जोरों से वर्षा होने लगी, मैंने अपने भाई दुर्गादत्त जी से पूछा ऐसी वर्षा में जब कि लकड़ियाँ सब भींग गई हैं अग्नि संस्कार कैसे होगा ? तब उन्होंने कहा कि जैसी इनकी मरज़ी होगी हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यह अन्तिम चमत्कार भी कुछ न कुछ दिखलायेंगी, जरा धीरज धरो और उनकी लीला को तो देखो ! बस ! थोड़ी ही देर के बाद वर्षा बिल्कुल बन्द हो गई। घृत, कपूर एवं चन्दन से अग्नि प्रज्वलित करके दाह कर्म किया गया। कुछ लोगों का विचार था कि आज रात्रि को उनकी चिता में से कुछ राख ले जायेंगे, कारण कि ऐसे-ऐसे सिद्ध पुरुषों की राख इत्यादि से भी कई प्रकार के जन्त्र, मन्त्र, तन्त्र सिद्ध होते हैं। मगर इधर प्रेमियों ने परस्पर पहिले से ही यह निश्चय कर रक्खा था कि सन्ध्या को वापस लौटते समय कोयला राख इत्यादि सब को श्री सरयू जी में ही प्रवाह करके तब घर जायेंगे। मगर सन्ध्या होते ही इतने जोरों से वर्षा होने लगी कि समस्त राखादि को श्री सरयू जी स्वयं बहाकर ले गईं, किसी को कुछ नहीं करना पड़ा। यहाँ तक कि चिता वाली जगह पर एक-एक हाथ सरयू जी का जल बहने लगा, यह है उनकी अन्तिम लीला।

Scanned by CamScanner

(६८) पाठको ! प्रातःकाल होते ही आपकी अर्थी का एक बहुत सुन्दर विमान बनाकर उस उच्च विमान पर आप का शव पधराया गया। हजारों जनता एवं प्रेमीगण और संत, महन्त भी पुष्पों की वर्षा एवं निछावरें करते हुये श्री सरयू जी के पावन तट पर ले गये; वहाँ इनका विधि विधान से अन्तिम दाह संस्कार कार्य हुआ।

पाठको ! इनका माता जी के कुसुम कोमल हृदय पर जो चोट आई वह अकथनीय है, आप तो शव को देखते ही पछाड़ खाकर गिर पड़ीं, और कई घंटों तक होश नहीं आया। इनकी श्री माता जी अभी जीवित हैं, जो कि श्री त्रिहौतीभवन में रह कर अभी तक प्रतिदिन श्री युगल सरकार के सुन्दर चित्रपट का पूजन करती हुई कालक्षेप कर रही हैं। श्री किशोरी जू के कथनानुसार "हम किसी के वेटे नहीं हैं," हम तो श्री सुनयना जू की बेटी हैं, आप ही उनके बेटे हैं। (देखो चरित्र नं० ६५) इसलिए अब तक पुजारी जी अपनी शिष्या की अपनी ही माता के समान सेवा कर रहे हैं। भगवान की लीला बड़ी विचित्र है, इसको भगवान ही जानें कि इसमें भी क्या रहस्य था। उस समय श्री पुजारी जी महाराज की दशा भी अत्यन्त शोचनीय थी, यदि श्री राम जी के स्वरूप एवं दूसरे प्रेमीगण इनको पकड़ कर अपनी देख रेख में न रखते, तो हो सकता था कि यह भी उनके विछोह में जीते ही सरयू प्रवाह हो जाते। कारण कि समीपी भक्त एवं सेवक के लिये तो सबसे सुख की वस्तु है प्रिय संयोग, एवं दुखद है प्रिय वियोग। तब भला श्री पुजारी जी के हार्दिक दुख का कौन वर्णन कर सकता था जिनको निरन्तर

Scanned by CamScanner

सात वर्ष तक श्री सिद्धकिशोरी जू का सुन्दर संयोग प्राप्त होकर अन्त में दुखद वियोग प्राप्त हुआ।

उस समय चारों तरफ से दुख का समुद्र उमड़ रहा था। यद्यपि सभी लोग दुखी थे, उनके दुख में दुख को भी दुख हो रहा था, पर श्री पुजारी जी के दुःख की तो कोई सीमा ही न थी। परन्तु तो भी श्री पुजारी जी, मौनी श्री हरिसेवक दास जी, पं० रुद्रदत्त सिंह जी, पं० दुर्गादत्त जी, बाबू रामदयालु सिंह जी स्पीकर, श्री मस्तराम जी (पंजाबी), श्री लछमन शरण जी तथा इनके अलावा और भी बहुत से प्रेमियों ने (जिनका नाम मुझे याद नहीं रहा) मिलकर विधि-विधानपूर्वक इनका अन्तिम कृत्य पूरा किया। तेरही के दिन भी एक बड़ा भारी भंडारा (भोज) करके संत-महन्त, ब्राह्मण, अतिथि, अभ्यागत, सेवक एवं कंगालों तक को सादर सप्रेम भोजन, दक्षिणा से सन्तुष्ट करके श्री सिद्धकिशोरी जी की जय जयकार बोलते हुए सब प्रेमीजनों ने अपनी-अपनी उदारता एवं सच्चे प्रेम का पूर्ण परिचय दिया। कई सज्जनों द्वारा ज्ञात हुआ है कि उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी की बीमारी के समय दान, पुण्य एवं भंडारा इत्यादि में पन्द्रह हजार रुपया से कुछ अधिक ही खर्चा हुआ था।

भइया लक्ष्मीनिधि के नाम अन्तिम पत्र

(६६) श्री सिद्धकिशोरी जू की अन्तिम बीमारी के समय श्री पुजारी जी ने श्री अयोध्या जी से मेरे (लेखक को) नाम केवल एक ही पत्र दिया था जो कि मुझे स्थान करवी (चित्रकूट) में आषाढ़ सुदी अष्टमी को मिला था, उस लिफाफे से दो पत्र निकले थे। एक तो पुजारी जी एवं श्री राम जी का था, दूसरा

Scanned by CamScanner

श्री सिद्धकिशोरी जी का। श्री राम जी व पुजारी जी ने तो लिखा था, "भैया जी! आप की बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू इस समय बहुत बीमार हैं, आप जल्दी चले आवें।" परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जू के पत्र में लिखा था, "भैया जी! मैं बहुत अच्छी हूँ, प्रसन्न हूँ, अब शीघ्र अपने घर भी जाने वाली हूँ, आप कोई चिन्ता न करें। श्री राम जी तथा श्री महाराज जी आप से हँसी कर रहे हैं अभी आप यहाँ आने का कष्ट न करें। कारण कि आप भी अभी तीर्थयात्रा से लौटे हैं, आप का और आप के श्री गुरु महाराज का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है। भैया जी! हमको भूलना नहीं। यदि आप हमको भूल भी गये, तो यह बहिन आप को कदापि न भूलेगी।"

"मोहे रक्षक जिय जान के करियो सदा तुम प्रेम ।
जो कदापि मोंहि भूलियों भैया न छाँड़व नेम ॥"

पाठको! मुझे महान दुःख है कि मैं उस समय श्री सिद्ध-किशोरी जी के उन गूढ़ शब्दों की गहराई तक न पहुँच सका, इसलिये अभाग्यवश उनके अन्तिम दर्शन से भी वञ्चित रहना पड़ा! उनके पत्र का आशय था कि मैं अपने घर (श्री साकेत धाम) को जाने की खुशी में प्रसन्न हूँ, बीमार नहीं हूँ। बस! इसके पाँचवें दिन श्री प्रीतमशरण जी श्री जानकीकुँड निवासी ने मेरे पास स्थान कर्वी में आकर मुझे सन्देश दिया। कि श्री सिद्धकिशोरी जी आषाढ़ शु० ६ की रात के समय श्री अयोध्या जी से श्री साकेतधाम पधार गई हैं। मुझे नवमी के संध्या समय आपके निमित्त अन्तिम सन्देश इस प्रकार से दिया गया था कि मैं आज रात को ग्यारह बजे साकेत जा रही हूँ हमारे भैया लक्ष्मीनिधि (अधिकारी श्री रामगोपालदास जी) के पास हमारी ओर से जाकर आशीर्वाद देते हुये आश्वासन देना कि

Scanned by CamScanner

वह घबरावें नहीं, कारण कि गुलाब के फूल के साथ काँटे की तरह संयोग में भी हमेशा वियोग का काँटा बना ही रहता है, इसलिए जीवन का अन्त मरण और संयोग का अन्त वियोग जान कर हमारे भैया (राजकुमार जी) हमारे बिछोह से दुखी तथा व्याकुल न होवें, मैं उनसे पृथक नहीं हूँ; वह मुझे जहाँ भी याद करेंगे मैं उनसे अवश्य मिलूँगी ! और यह भी कहा था कि मैंने उनको जानबूझ कर अयोध्या जी न आने के लिये इसलिये लिख दिया था, कि प्रथम तो उनके श्री गुरुदेव अस्वस्थ एवं भैया जी भी तीर्थ यात्रा से लौट आने पर बीमार हो गये हैं। यदि उस समय मैं उनको यहाँ बुला लेती; तो उन्हें भारी खेद और असह्य दुःख होता इसलिये नहीं बुलाया। सज्जनो! इस प्रकार की हृदय विदारक दुर्घटना को सुनते ही मेरे तो होश हवास उड़ गये, हृदय में विरहाग्नि धधक उठी, मैं मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा, और सर्वस्व गँवाये व्यापारी की भाँति, जल से पृथक हुई मछली की तरह एवं मणि छीने हुये सर्प के सदृश्य मैं तड़फड़ाने लगा। बिछोह के कारण व्याकुलता से मेरा हृदय फटा जाता था; विरह की ज्वाला मेरे अंग-अंग को भस्म कर रही थी; शाम का वक्त था; अब करता भी तो क्या करता ? डाकखाना भी बन्द, तारघर भी बन्द; उधर बीमारी के कारण मैं स्वयं भी श्री अयोध्या जी जाने से लाचार, इधर श्री गुरु महाराज जी भी अस्वस्थ ! चित्त चिन्ता के पंक में फँस गया, मेरी साँप छछूँदर की सी दशा हो गई। चिन्ता से मैं व्याकुल होकर उन्मत्त पागलों की तरह इधर-उधर दौड़-धूप करने लगा। कारण कि भावना ही तो पागल बना देती है; कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी। श्री किशोरी जू के वियोग में अच्छी चीजें भी मुझे काटने लगीं, और मैं काल की कुटिल गति को कोसता हुआ अपनी कुंज में चला आया। कुछ सचेत होने के बाद पूजा में

रखे हुये भवभयहारिणी श्री सिद्धकिशोरी जी के उस चित्रपट के सामने पहले तो प्रणाम किया, फिर उस जगत मंगल मूर्ति को हृदय में धारण करके नम्रभाव से करबद्ध प्रार्थना की ! बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी क्या यह घटना सत्य है, अथवा मैं कोई स्वप्न ही देख रहा हूँ या आप ने मेरी प्रेमपरीक्षा ही की है ? अब जिस प्रकार हो सके; मुझे सचेत करके मेरे प्राणों की रक्षा करें। आपके वियोग में मेरे प्राण निकलना चाहते हैं; यदि ये अभागे निष्ठुर प्राण न निकले तो मैं तुरन्त श्री मन्दाकिनी गंगा में ही कूद कर इस नश्वर शरीर को त्याग दूँगा। आत्म-हत्या से चाहे मुझे नर्क ही क्यों न मिले मुझे इसकी कोई चिंता नहीं। आपके बिना अब मेरा कौन आधार है ?

सज्जनों ! केवल पाँच सात मिनट के बाद पहले तो मेरी बाईं आँख फड़की, फिर बिल्ली ने रास्ता काटा, इधर पूजा में रखे चित्रपट का शीशा श्री किशोरी जू के सिर से चरणों तक करैक हो गया (चिटक गया) इस प्रकार के यह तीनों अशगुन मेरे लिये अमंगल सूचक हुये, अब तो मैं समझ गया कि यह दुर्घटना झूठी नहीं सच्ची है, और मेरा शोक-सन्ताप पहिले से भी अधिक बढ़ गया। किसी साधु ने इस दुर्घटना को मेरे श्री गुरु महाराज जी से भी वर्णन कर दिया तो झट श्री गुरु महाराज ने मुझे अपने समीप बुलाकर सान्त्वना देते हुये बहुत कुछ समझाया, बुझाया कि बेटा तुम्हारा कहना ठीक है; मृत्यु के स्थाई वियोग का दुख जरूर असह्य होता है। परन्तु भगवत् इच्छा समझ कर उसको भी सहन करना ही पड़ता है। काल की गति प्रबल है, इसे कोई मिटा भी तो नहीं सकता, और "हानि-लाभ जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ!" समझ कर सब्र करना ही पड़ता है। दुख सुख किस पर नहीं आते, बन्धु, बान्धवों का वियोग किसे नहीं होता ? जय-विजय का अनुभव

किसे नहीं करना पड़ता। होनहार को कोई रोक नहीं सकता, तक़दीर का लिखा अमिट है, एवं "फरा सो झरा औ बरा सो बुताना।" मरना जीना तो प्राणीमात्र का काल के साथ ही बँधा है। जो बात निश्चित है उसके लिये शोक करना भी व्यर्थ है। सब अपने प्रारब्ध के आधीन हैं। जिस का जिस के साथ जितनी देर तक का पूर्वजन्म का सम्बन्ध होता है, उतनी देर तक वह उसके साथ रह कर समय पूरा होते ही फिर चला भी जाता है। प्रारब्ध कर्म ही मिला देते हैं, और वे ही फिर अलग भी कर देते हैं। सभी जीव पूर्वजन्मों के कर्मों में बँधे हैं। भगवान जो करते हैं शुभ ही करते हैं। उनकी लीला को कोई जान नहीं पाता। वह तो कोई जीवनमुक्त अवतारी महान पुरुष ही थे, इसलिये उनकी चिन्ता करना भी व्यर्थ है। सज्जनो! मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि उमड़ चुकी थी इसलिये न कोई उपदेश भाता था और न ही खाना पीना सोहाता था। मुश्किल से रात्रि रोते-रोते कटी! जिस किसी भी मनुष्य की चिन्ता सीमा से अधिक बढ़ जाती है तो वह दिन रात सोते-जागते चलते-फिरते उसी की उधेड़ बुन में ही लगा रहता है।

बस! उस समय मेरी भी यही दशा थी। मुझे इस बात का विशेष दुख था कि कितने स्नेह, प्रेम तथा कृपा से श्री किशोरी जी ने मुझे अपनाया। अपना भैया बनाया, खिलाया, पिलाया, लाड़ लड़ाया। केवल इतना ही नहीं। मुझे चार महीने तक अपने साथ-साथ देशाटन भी कराया। किन्तु इसका कारण क्या है कि इतना होने पर भी मुझे अपना अन्तिम दर्शन क्यों नहीं कराया।

"भोजन भाषण शयन में साथ-सिद्धकिशोरी के हम रहे,
भैया पालत प्रेम को अब बहिन वियोग कैसे सहे?"

हा! निष्ठुर विधाता तूने मेरे साथ भारी अन्याय किया,

Scanned by CamScanner

मुझको अपनी प्रिय बहिन की छत्रछाया से दूर कर दिया। अब तो मुझे रात्रि दिवस शोक सागर में निमग्न रहते हुये उनके सुधापगे वचनों, लाड़, प्यार, स्नेह एवं वात्सल्य के महान लाभ से भी वञ्चित रहना पड़ेगा। मेरा जीवन संकटग्रसित हो रहा है। मुझे तो भविष्य की चिन्ता भी सता रही है; कि मेरा जीवन अब किस प्रकार व्यतीत होगा। बहिन आप तो मुझे अकेला छोड़ कर साकेत को चली गईं। किन्तु भैया की स्मृति भी बनी रहे, इसे भूल न जाना। सज्जनो! मनुष्य जब अधीर हो जाता है तो आशा उसका हाथ पकड़ कर आगे को बढ़ा देती है। बस इसी प्रकार सोचते विचारते रोते गाते निद्रादेवी ने मुझे धीरे-धीरे अपनी गोदी में सुला दिया। परन्तु मेरी आँखों में नींद कहाँ? श्री किशोरी जू का वियोग दृश्य तो प्रत्यक्ष मेरी आँखों के सामने नाचता दिखाई पड़ता था। किसी प्रकार मैंने रोते गाते आधीरात बिताई। उधर रात्रि के तीन बजते ही मैं एक स्वप्न देखने लगा। श्री सिद्धकिशोरी जी एक दिव्य अनुपम ज्योतिर्मय सिंहासन पर विराजमान हैं, और मैं उनके चरणों के निकट बैठा रोते हुये प्रार्थना कर रहा हूँ।

बहिन! आप मुझे अकेला रोता-बिलखता छोड़ कर यहाँ कैसे चली आई हैं? अब मैं किस के आधार पर अपना जीवन बिता कर अपनी व्यथा भी किसको सुनाऊँगा? आपके सदृश अब मुझसे कौन प्रेम प्यार, एवं लाड़दुलार करेगा? अब मुझे भैया-भैया कह कर कौन पुकारेगा, एवं मैं भी किस को बहिन-बहिन कहकर सुख पाऊँगा? आप की कृपा वात्सल्य अपने ऊपर देख कर मुझे भारी आह्लाद होता था, चित्त को शान्ति व सुख मिलता था। अब किसकी कृपा का सहारा लूँगा? मृत्यु रूपी ग्राह मुँह फाड़े बैठा है। इस संसार सागर से मैं भयभीत हो रहा हूँ; अब इस से मेरी रक्षा भी कौन करेगा? बहिन! मैंने संसार

Scanned by CamScanner

से मुख मोड़ा, घर वालों से नाता तोड़ा, आप से दिव्य नाता जोड़ा फिर अब मैं किसकी शरण जाऊँ ? इधर कृपावारिधि भयत्राता; श्री सिद्धकिशोरी जू ने जब मेरी वेदनापूर्ण वाणी द्वारा मर्मस्पर्शी शब्दों को सुना, तो प्रेमपूर्वक मुझे आश्वासन एवं धैर्य बँधाती हुईं पुचकार कर समझाने लगीं; भैया जी ! आप क्यों इतने घबरा कर अधीर हो रहे हैं ? धीरज को धारण कर चिन्ता किसी बात की न करें।

वीरन ! हमारे ही सदृश सब लीलास्वरूप आपको भैया-भैया कह कर आपसे प्रेम एवं लाड़ दुलार करेंगे। मैं भी अपने भैया को भूल नहीं सकती, जब जहाँ भी याद करोगे वहीं दर्शन दूँगी। भैया ! जो कुछ भी कष्ट आन पड़े उसको भी प्रारब्ध का भोग ही मान कर प्रसन्नतापूर्वक भोग लेना चाहिये। यदि आप मुझे अपनी ही बहिन मानते हैं तो मेरी इस आज्ञा का पालन अवश्य करें। अभी कुछ काल तक अपने स्थान में रह कर भगवान की सेवा करते हुये श्री गुरु महाराज की अन्तिम सेवा भी प्रेमपूर्वक कर लें। यदि आपने मेरा कहना मान लिया तब तो सुख पाओगे, आप का हित एवं कल्याण इसी में है। और यदि मेरा कहा न माना तो पछताओगे। एक मात्र अपने प्यारे प्रीतम की प्रतीक्षा करते हुये उन्हीं का स्मरण-गुणगान द्वारा कालक्षेप करते हुये समय को बिताते जाओ, मैं आपको कदापि भूल नहीं सकती। परन्तु आप भी मुझे भूल न जाना।

सज्जनो ! इतना कहते-कहते श्री सिद्धकिशोरी जू ने मेरे सिर पर अपना कर-कमल रखा, पुचकारा, फिर न जाने कहाँ अदृश्य हो गईं। उधर मैं भी जाग उठा देखा तो तीन बजे हैं। इस प्रकार शोकसागर में डूबते उतराते सवेरा हो गया। मैंने जाकर श्री गुरुमहाराज जी के चरण-स्पर्श किये, सादर साष्टांग दण्डवत की, और सर्वप्रथम रात्रि के स्वप्न का पूर्ण वृतान्त

Scanned by CamScanner

भी उनसे कह सुनाया। श्री गुरु महाराज जी का कथन था कि इसको केवल श्री किशोरी जी की असीम अनुकम्पा का ही फल समझो जिन्होंने तुमको अति व्याकुल एवं अधीर देखकर स्वप्न द्वारा दर्शन देते हुए तुमको धैर्य बँधा कर आज्ञा भी प्रदान की, इसलिए उनको कोई साधारण बालक न समझ लेना। वह तो साक्षात् कोई अवतारी महान पुरुष ही थे। अब इनकी आज्ञा का कहीं भूल कर भी उलंघन नहीं कर बैठना। यदि उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुये कार्य करते रहोगे, तो अवश्य तुम्हारा हित और कल्याण होगा। देखो आशा के सहारे से ही संसार का चक्कर घूम रहा है, सचमुच मनुष्य आशा के ही सहारे जीता है। यदि जीवन में आशा सहचरी न हो तो एक क्षण भी जीवित न रहे। कोई किसी आशा से, तो कोई किसी आशा से अपने को बचाये हुये हैं। संसार का अस्तित्व तो आशा के ऊपर ही अवलम्बित है। देखो मनुष्य कितना आशावादी है। इस आशा के ही पीछे संसार में व्यापार है। इतना कहकर श्री गुरु महाराज ने मुझे आज्ञा दी कि जाओ स्नान ध्यान करो, फिर अपने कार्य को देखो। और साथ ही साथ यह भी कहा कि सभी के कर्म एवं पुण्य पृथक-पृथक होते हैं। संयोग-वियोग भी प्रारब्ध के अनुसार ही होता है। इसलिए प्रारब्ध की विभिन्नता के कारण अनिच्छापूर्वक सम्पूर्ण दुख हृदय पर पत्थर रख कर सहन करने ही पड़ते हैं।

सज्जनो! यद्यपि श्री किशोरी जी का विछोह अति दुखद् था। जी चाहता था कि किसी निर्जन वन में भाग जाऊँ परन्तु ऐसा न करके श्री सिद्धकिशोरी जी एवं श्री गुरु महाराज जी की आज्ञा का पालन करते हुये पूर्ववत् स्थानीय एवं संस्कृत कालेज के कार्यों की देख रेख करने लगा।

Scanned by CamScanner

❀ भैया की करुण पुकार ❀

(१००) श्री गुरुदेव के साकेतवास पर ता० २७-२-१९३९ का रात्रि के समय मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट के सम्मुख प्रार्थना करते हुये अपने हृदय का दुख इस प्रकार प्रकट किया। मेरी प्यारी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी। मेरी लाड़ली एवं महान उदार बहिन श्री जनकदुलारी जी! आप कितनी कृपा मुझ पर करती हैं इसको मैं भली भाँति जानता हूँ। उसे किन शब्दों में कहूँ। आपकी असीम कृपा, नसीम वात्सल्य एवं उदारता का पूर्ण अनुभव करके मेरा तो हृदय फूला नहीं समाता! अपने प्रति आपकी परम अनुकम्पा प्रतिदिन बढ़ती ही दिखाई देती है। मैं क्या था और क्या बन गया। आप ने मानो काँच को कंचन ही बना डाला। आपका मुझ दीन-हीन पर कितना स्नेह और कितनी ममता है, इसे तो स्मरण करते मात्र ही मैं गद्‌गद् हो जाता हूँ। इस प्रकार के अधिक स्नेह में मुझे शंका भी होने लगती है, कि मैं तो कदापि इतने स्नेह का पात्र नहीं था। मेरा इतना सौभाग्य ही कहाँ जो आप मुझसे इतना दुलार एवं प्यार कर रही हैं! अहा! एक साधारण अबोध बालक को श्री मिथिलेश-राजकुमार बना देना भला आपके सिवाय दूसरे किसमें शक्ति है! आपकी इस अनन्त उदारता का मैं अनन्त ऋणी हूँ। बहिन! आपके लिये मेरे हृदय में कितना आदर है, किस क़दर प्रेम है, उसे भी कैसे बताऊँ। आपकी असीम कृपा द्वारा श्री गुरुदेव भी ऐसे कीर्तिवान, प्रभावशाली, दयालु, उदार एवं कृपा सागर सिद्ध महान पुरुष मिले, कि इस संसार में ऐसे गुरुजनों का मिलना ही दुर्लभ है। कहाँ तक कहूँ मेरा समस्त जीवन आप की असीम अनुकम्पा द्वारा अब तक परमानन्द से ही गुजरा,

Scanned by CamScanner

श्री रसिक सिरताज श्री मिथिला अवध हृदय के महाराज श्री युगल सरकार (बहिन-बहनोई) के वात्सल्य, प्यार एवं आशीर्वाद का मैं अधिकारी बन गया, इससे बढ़ कर मेरे लिये हर्ष ही क्या हो सकता है? मुझे तो भारी अचम्भा इस बात का भी है कि आप (श्री युगल सरकार) मुझ पर रीझ कैसे गये, मैं इस योग्य था ही कहाँ? आपने समस्त सुख देते हुये जिस प्रकार मुझे अपनाया है। इस प्रकार शायद ही और किसी को अपनाया होगा? केवल इतना ही नहीं, बल्कि संसारी कुटुम्बियों के मोह ममता के जाल से भी छुड़ाकर अपने दिव्य माता-पिता पूज्य प्रातःस्मरणीय श्री सुनयना अम्बा जू एवं स्वनाम धन्य परम वन्दनीय पूज्य पिता श्री जनक जी महाराज की स्नेहमयी गोदी तक पहुँचा दिया, तो क्या मेरे लिये यह कोई कम गौरव की बात है।

हे प्रिय बहिन! आप तो सबके हृदयगति की जाननहारी हैं, मेरे हृदय की लालसा भी आपसे छिपी नहीं है। मेरी सम्पूर्ण कामनायें तो आपकी कृपा से पूर्ण हुईं। क्या मुँह लेकर मैं आपकी प्रशंसा करूँ, किन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करूँ। एक उपकार हो तो उसका कथन भी किया जाय। मेरी तो पग-पग पर आपने देख-रेख एवं रक्षा की है। आपने मेरे अनेकों मनोरथों को पूरा किया है, मेरी सभी लालसाएँ पूरी की हैं, परन्तु मेरी एक लालसा शेष भी है। यद्यपि मेरे लिये तो अगम है, किन्तु आप पूर्णकाम एवं परम उदार के लिये सुगम ही है। इसलिये मेरी इस कामना को भी पूर्ण करने की अनुकम्पा करें। बहिन! मैं संसार का सम्राट नहीं बनना चाहता, चक्रवर्ती राज्य की मुझे चाहना ही नहीं! स्वर्ग के राज्य से भी मुझे बे-परवाही है। मैं और किसी प्रकार के अधिकार की भी अभिलाषा नहीं करता। यहाँ तक कि, मोक्ष की भी तनिक इच्छा नहीं है। यदि

Scanned by CamScanner

इच्छा और चाह है तो केवल आप श्री युगल सरकार (श्री सीता-रामजी) के ही चरणों की सेवा, भक्ति एवं भजन की। बस बहिन! म तो अब पल्ला पसार कर आप से यही भिक्षा माँगता हूँ कि अपने श्री चरणों से कभी न्यारा न करते हुये मुझे अपने भजन एवं सेवा की शक्ति प्रदान करें, कारण कि :—

"भजन बिन जीवन को धिक्कार।
चाहे धन सम्पत्ति सब कुछ हो-हो जगत पर अधिकार॥"
ठाट बाट हो अनेकों हो सुख सकल प्रकार।
पर हरि भक्ति रस जिसको हुआ न अंगीकार॥
उसने मानव तन पाकर किया कष्ट बेकार।
नहीं जावेगा संग राज ये कहते भैया लक्ष्मीनिधि पुकार॥

बहिन! त्रिलोकी का त्रिकालिक सुख भगवत् भजन एवं श्री मिथिला अवधरस के एक सीकर के साथ भी तुलना करने योग्य नहीं हैं। मैं तो सदा सर्वदा आप के नाम की छत्र-छाया में ही रहना चाहता हूँ। अब तो मुझे अपने कृपा कोट ही में बसाइये, जहाँ श्री युगल सरकार की करुणा वर्षा से भींगता और मुस्कराता रहूँ। कारण कि इसके सिवाय मेरे दुखों का निवृत्ति की भी कोई सूरत इस संसार में दिखाई नहीं पड़ती। मैं तो इस दुखपूर्ण अधर्मी कलिकाल में जीना भी न[illegible] चाहता, और यहाँ अधिक जीने में लाभ ही क्या? बहिन! अब तो प्रेमरूपी पीयूष पिला कर आप अपने ही चरणकमलों में मुझे निवास दें। "अब किसी भी चीज की मुझे दरकार नहीं, इस असार संसार से कुछ भी मेरा सरोकार नहीं।" आप मुझे ऐसा आशीर्वाद देकर आत्मशक्ति प्रदान करें कि जिसके बल पर नाम का तार टूटने न पावे, और आप की कृपा एवं भजन के प्रताप से पूर्व सञ्चित पापकर्मों का खाता भी रद्द हो जाय।

Scanned by CamScanner

बस ! केवल यही भिक्षा माँगता हूँ। एवं शरीरान्त के पश्चात् आप के दिव्य अविचल साकेतलोक में भी केवल आप की सेवा को छोड़ कर और कुछ नहीं चाहता। क्या भैया पर इतनी कृपा न करोगी बहिन ! अब रही मेरी :—

दूसरी प्रार्थना

मुझे क्या मालूम था, दुर्दिन वही आ जायगा।
फ़ुरकते गुरुदेव में यह, दर्देदिल बढ़ जायगा।
क्या खाक़ हो तसकीं, जो पैगाम तक आया नहीं।
इस मोहब्बत के पले को, सब्र क्यों कर आयेगा॥
सिर से अधिकार दाता का साया ही जब उठ गया।
"अधिकारी" धूप में फिर क्योंकर नहीं मुरझायेगा ?

हा ! काल की कैसी कुटिल गति है। हाय ! यह संयोग वियोग का विधान विधाता ने कैसा क्रूर बनाया है। अपने परम प्रिय सुहृदों तथा पूज्य आचार्यों से मिलकर बिछुड़ना कैसा दर्दनाक काण्ड है। बहिन ! मैंने आप की प्रथम आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, बल्कि २६/२/१६३६ तक सर्वथा उसका पालन ही किया, परन्तु अब इस से अधिक पालन करने की ... में नहीं रही। जब कि मेरे सिर से अधिकारदाताओं का साया ही उठ गया, अर्थात् मेरी इस जीवन नौका के कर्णधार श्री गुरु महाराज मुझे अकेला छोड़ कर आप के दिव्य-लोक (साकेत) में २६/२/१६३६ को आप के ही समीप पहुँच गये; और उन से पहिले आप ने भी मुझे त्याग दिया तो अब किस के बल-भरोसे किस आधार पर मैं यहाँ रहूँ और क्या करूँ। वियोगाग्नि से मेरा रहा सहा हृदय भी दग्ध हो रहा है, हाय कोई उपाय नहीं सूझता कि इस राज काज रूपी जाल से कैसे और कहाँ निकल जाऊँ ? एक तो आप का विछोह; दूसरे श्री

गुरु महाराज का दुखद विरह मुझ से कैसे सहन हो सकेगा। इसलिये प्रार्थी हूँ कि मुझे भी अब शीघ्र अपनी एवं श्री गुरु महाराज जी की चरणसेवा के निमित्त साकेत में बुला लें। छाया की भाँति मैं सदा आप के संग रहता हुआ आप दोनों की चरणसेवा करूँगा। इस संसार की अशान्ति से भी दुख ही दुख है। मैं अपनी वेदना के आँसुओं में यह शक्ति नहीं पाता कि इनसे यह आग बुझा सकूँ। मन ही मन में कुढ़ा करता हूँ, दिन रात विरह वियोग में व्याकुल रहने के कारण विरह की ज्वाला मेरे अंग-अंग को जला रही है इसी से आतुर हो रहा हूँ, कि किस प्रकार यह आग बुझे ? जो कुछ भी सुख एवं आनन्द था वह सब तो बहिन ! आप के एवं श्री गुरुदेव के साथ ही साथ चला गया, अब तो यहाँ रात दिन केवल रोना और आँसुओं से मुँह धोना ही बाक़ी रह गया है। बिना किसी आधार के संसार में सुख, सन्तोष एवं धैर्य भी कहाँ ? आप की तो याद आते ही मेरी आँखों से आँसुओं का बाँध टूट जाता है, और मेरा रोम-रोम आपको पुकारने लगता है बहिन ! तुम कहाँ हो ? आप की अमृतमयी वाणी सुनने को मेरे कान मचल रहे हैं और मेरा मन आप के दर्शनों के निमित्त उतावला हो रहा है। प्यारी बहिन ! जब कि दीन दुखियों पर दया और कृपा करना आपका दृढ़ व्रत ही ठहरा तब तो आप ही बतावें कि इस समय मेरे जैसा भूला भटका एवं दीन दुखी इस संसार में कौन है ? और इस दुख की ज्वाला से दग्ध मेरे अन्तःकरण को आप के सिवाय शीतल करने में भी और कौन समर्थ है, तथा आप के समान किस में शक्ति है ?

आपके बराबर कौन दयालु और उदार है कि जिसे मैं अपना दुखड़ा सुनाऊँ ! फिर आप मुझे इस असार संसार से न छुड़ा कर उलटा इसके नश्वर भोग पदार्थों एवं मोह माया के

Scanned by CamScanner

जाल में क्यों उलझा रही हैं, भैया को किस लिये बंधन में फँसा रही हैं ? इनसे सुलझा कर शीघ्र मेरी रक्षा करें। हे करुणा सागरी जू ! जिस प्रकार आपने अपना दर्शनामृत पिलाकर हमारे श्री गुरु महाराज पर असीम कृपा की है, तो उन्ही की भाँति मुझ अधमरे को भी अपने चरणों में क्यों नहीं बुला लेतीं, जिससे यहाँ भविष्य में आने वाले समस्त झंझटों और लड़ाई झगड़ों से तो छुटकारा पा जाऊँ ! बहिन आप का चित्त तो बड़ा ही कोमल और स्वभाव भी दयालु है। मुझे भारी अचम्भा तो इस बात का है कि आपने भइया को अपनाकर भुला क्यों दिया ?

चरणों में अर्पित है भैया, चाहो तो बहिन स्वीकार करो।
यह तो सार है राम जी का, इसे ठुकरा दो चाहे प्यार करो।।

आप परम समर्थ एवं मैं असमर्थ हूँ। इसलिए मुझे तो दृढ़ विश्वास है किं आप भैया को अवश्य अपनी प्रेममयी गोदी में प्रेमपूर्वक बिठावेंगी। यदि ऐसा न हुआ तो देख लेना बहिन, भारी अनर्थ होगा ! बहिन-भाई और सार बहनोई का सम्पूर्ण नाता झूठा और व्यर्थ होगा।

हा बहिन ! क्या प्यारे बहनोई एवं गुरुदेव के मुखकमल एवं कोमल चरणों को देखकर कभी मेरी यह आँखें भी शीतल होती ! मुझे यहाँ कोई सुख नहीं है ! यहाँ के महल अटारी तो मुझे अब सर्पों के समान ही काटने दौड़ते हैं। कलि के कुचाल से भी भारी हैरान और परेशान हूँ, इनसे मेरी रक्षा करें।"अब तुम बिनु कौन तन ताप हरे।" मेरी चिन्ता की चिनगारिया आँखों के सामने जुगुनू की भाँति चमक-चमक कर चौंधियाँ देती हैं। शोकसागर की प्रबल गम्भीर गर्जना से भयभीत होकर मेरा हृदय सहम जाता है। आपके पवित्र गुण हृदय को व्यथित कर रहे हैं। आपके गुणों की स्मृति में ही मेरा जीवन है। दर्द भरी टीस, एक कर्कश कूक, एवं हृदय की हूक उठा करती है। इधर विकट वेदना, पिशाच की भाँति मुझे निगलने को दिखाई

Scanned by CamScanner

पड़ती है, मैं यह भी नहीं जानता कि भविष्य में मेरे भाग्य में क्या लिखा है ! अब तो केवल आपके करकमलों द्वारा ही मैं सुरक्षित रह सकता हूँ, दूसरा कोई उपाय नहीं। मैं आपके पहिले उपकारों को कहाँ तक गिनाऊँ, कहाँ तक आपके गुण गाऊँ, आपकी अहैतुकी कृपाओं का भी किस प्रकार वर्णन करूँ। मैं अपनी कुशल भी क्या बताऊँ, कुशल तो बहिन प्रकाश में होती है न ? अन्धकार में तो चारों तरफ भय ही भय होता है ! सूर्य के अस्त हो जाने पर तम में प्रकाश कहाँ ? भुवन भास्कर रूपी श्री गुरुदेव के प्रस्थान कर जाने पर अब मेरे भाग्य में कुशल कैसी ? अब तो सर्वत्र अकुशल ही अकुशल मालूम पड़ती है क्या विधाता ने मेरे शरीर को दुःख भोगने के निमित्त ही इस संसार में रचा है ?

वे वक्त जाने वाले का इज़हारे हाल है।
चढ़ती उतरती धूप ज़माने की चाल है॥
बढ़ने को जो निहाल थे मुरझा के रह गये।
खिलने को थे जो फूल वह कुम्हला के रह गये॥
बादे-बहार चलने से रुक-रुक के रह गई।
उठने की थी जो शाख वह झुक-झुक के रह गई॥

आह ! अभी इस उजड़े दयार व सूखे चमन में बहार आने भी न पाई थी, इन बहार की मुत्तलाशी आँखों ने फूलों की शादाबी और चमन की हरियाली देखी भी नहीं थी। दिल अभी मानूसे बहारां भी होने नहीं पाया था, किसी मसरत और खुशी के मौका पर चन्द दिलों को मिल कर खुशी के आँसू बहाने का, नजरों में नजरें डाल कर जेरेलब मुस्करा लेने का वक्त भी नहीं आने पाया था। कि नागाह खिजाँ की आमद की खबर इसकी मन्हूस और मस्मूम हवा के झोकों से मिली। एकबारगी भारी सदमें की गहरी चोट से मैं तलमला गया।

आँखें चपोरास्त निगरां थीं, मगर होश ठिकाने न रहने के सबब कायेनात की सारी चीजें नजरों से ओझल थीं। फ़ज़ा तारीक हो गई, सिर में एक अजीब सी टीस होने लगी, दिमाग़ चरखी के मुवाफिक चकराने लगा, सुनहरे ख्वाबों का शीराज़ा बिखर गया। उम्मेद की शादाब कलियाँ मुरझा कर खाक बदामाँ हो गईं, बहार से नजरें चार होने का सहारा ही टूट गया।

यही ख्याल में था दम बदम, कि बहार देखेंगे अब के हम।
जो छूटे असीरेकफस से हम, तो सुना कि खिज़ाँ के दिन आ गये ॥

जो सूरतें खुशी की थीं ग़मनाक हो गईं।
अफ़सोस सारी आरजुयें खाक हो गईं ॥

लोग कहते हैं कि यह दुनियाँ एक सराय और मुसाफ़िर-खाना है। जिसमें तरह-तरह के मुसाफिर जगह-जगह से नहीं बल्कि एक ही जगह से आते और कुछ ही दिन रह कर फिर उसी जगह चले जाते हैं, जहाँ से आये थे। इस मुसाफिरखाना में उनके कयाम का औसत ६०-७० साल के करीब होता है, जो लोगों से मिलने और हँस-बोल लेने के लिये किसी तरह कम नहीं है। लेकिन फिर भी जब मुसाफिर सबों को छोड़ चलने की तैयारी में मशगूल होता है, तो लोग उसकी जुदाई का तसव्वर करके गला फाड़-फाड़ कर रोते और चीखते हैं, अपने दामनों और गिरेबानों को भी बदहवासी में पारा-पारा कर देते हैं। तब कोई आँख नहीं मिलती जो इस मुन्जिर को देखे और आँसुओं से भर न आये। फिर मित्रो क्या वजह है कि मैं अपनी प्रिय बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू के बिछुड़ने पर मातम न करूँ और उनकी याद में आँसू न बहाऊँ? जिन्होंने सिर्फ पन्द्रह साल तक की उम्र में हम लोगों के बीच कयाम किया हो, और इतने थोड़े ही अरसे में अपने हुसनेसलूक, खलूसेमुहब्बत और

Scanned by CamScanner

ग़ैरमामूली ज़राफ़त, बेहतरीन लियाक़त से अपने रिश्तेदारों, संत-महन्तों, हाकिम-अहलकारों, सेठ-साहूकारों एवं प्रेमी भक्त-जनों के दिलों में पूरे तौर पर जगह पा ली हो। जिन्होंने आज तक किसी के दिल को न दुखाया हो और अपनी लासानी करामातों से एक आलम बरतये हैरत में मुबतिला कर दिया हो। और खुशक़िस्मती से नाम भी "श्री सिद्धकिशोरी जू" कितना सुन्दर और प्यारा पाया हो, जो या तो चुपके से दिल में छिपाने के क़ाबिल है, या माला पर धीरे-धीरे जपने के लायक़।

मित्रो ! आज उन्हीं की जुदाई पर दिल बेताबी के साथ सिसकियाँ ले रहा है। आँखें उनके चरणों में आँसुओं के मोतीनुमा-कत्तरात का हक़ीर तोफ़ा पेश कर रही हैं। दिल फिर मिलने के लिये आरज़ू पेश कर रहा है। "सीने से ग़म की हूक उठी, उठ के रह गई, आँसुओं की नदी आँखों के रास्ते बह गई"। "एक रोज़ का रोना हो तो रोकर सब्र आये, और हर रोज़ के रोने को कहाँ से जिगर आये।"

ऐ गुलशने मिथिला के ताइरो, दरख्तो, पहाड़ो कुछ तुम ही बताओ। उस शिगुफ़्ता फूल को जिसकी खुशबू से प्रेमी समाज का दिमाग़ महका हुआ था, बादे तुन्द का झोंका कहाँ उड़ा कर ले गया ? ऐ बादे सबहा तू ही बता और सचसच बता, मेरी प्यारी बहिन, श्री सिद्धकिशोरी जू कहाँ छिपी हुई हैं ? बहिन ! क्या आप ने रिश्ता इसलिये क़ायम किया था, कि एक दिन अपने भैया को ठुकरा कर और तड़पते छोड़ चली जाऊँगी ? मेरी दर्दअंगेज़ गिरिया ज़ारी तो पत्थर को भी मोम बना रही है, फिर न जाने बहिन ! तेरा माखन सा कोमल हृदय आज किस चीज़ का बन गया है, जो मेरी इस दर्दनाक आहो-ज़ारी को सुनते हुये भी नहीं पिघलता। अगर इस आड़े वक़्त में आँख चुराई और दस्ते-शफ़क़त न फैलाया, तो मेरी तबाही और

Scanned by CamScanner

बरबादी में शक नहीं। बहिन ! क्या आप इस बात को गवारा करोगी कि आप का नाज़पर्वुरदा ब्रादर (लक्ष्मीनिधि भइया) तो तड़प-तड़प कर मर जाय और हमशीरा (बहिन) छिपी रहें ? हाय ! जब आप की खूबियाँ याद आती हैं, तो दिले-बेताब को तसकीं देने वाला और मुझे ख़ामोश कराने वाला भी कोई नज़र नहीं आता। एक दफ़ा आकर देख तो जायें कि आप की अदम-मौजूदगी में मेरी कैसी नागुफ़्ताबेह हालत हो रही है :—

इस मिथिला अवध की भी रखना याद तुम।
मुद्दतों जिसमें रही हो बहिन, आबाद तुम ॥
बहिन साकेत में बुलाओ तो खुशी इन्तिहा की है।
छोड़ा अगर तो प्राणों की मरज़ी फ़ना की है ॥
इमदाद ले के अपने दिले नासबूर से।
जो दुख दर्द था मुझे, कह दिया हज़ूर से ॥
तेरी याद में क्या रोयें, आँसू भी नहीं रोने के लिये।
पाया था तुम्हें बहिन किशोरी क्या खोने के लिये ॥

बहिन-बहिन-प्यारी लाड़ली बहिन, लो चला अब तुम्हारा भैया मन्दाकिनी गंगा की भेंट।

❀ श्री युगल सरकार का शुभदर्शन ❀

(१०१) मेरी करुण कथा जब प्रार्थनारूप में श्री सिद्धकिशोरी जू के पेश हुई तो रात्रि में स्वप्न होता है भैया ! घबराओ नहीं धैर्य्य रक्खो, मैं अभी आती हूँ। इतना सुनते ही मेरी अन्तरात्मा प्रफुल्लित हो उठी, और अनायास मेरे मुख से यह शब्द निकले :-

आज तो दम भर में अजल का सामना होने को था।
खैर गुज़री आ रहीं बहिन, क्या से क्या होने को था ॥

Scanned by CamScanner

सज्जनो ! करुणा को भी करुणासागर में डुबो देने वाली मेरी गद्‌गद् आर्तवाणी को केवल मेरी बहिन ने ही नहीं किन्तु इसके साथ-साथ मेरे परमप्रिय बहनोई श्री रामजी महाराज ने भी सुना और खूब सुना। तारीख २६-२-१९३९ की रात्रि को तीन बजे ही श्री चित्रकूट अन्तर्गत श्री मन्दाकिनी गंगा के तट पर स्थित स्थान कर्वीमाफ़ी में प्रिया-प्रीतम श्री युगल सरकार ने मेरे ही कुञ्ज में अपने दिव्यरूप से प्रकट होकर मुझे दैव-दुर्लभ अपने शुभ दर्शनों से कृतार्थ करते हुये मेरे मस्तक पर अपना सुखद शीतल अभय हस्त-कमल फेरा श्री युगल सरकार (श्री सीताराम जी) ने ज्यों ही अपनी करुणा दृष्टि से मेरी ओर निहारा ! उनके केवल दर्शन एवं स्पर्शमात्र से ही मेरी समस्त शारीरिक वेदनायें और चिन्तायें तुरन्त नष्ट हो गईं। मुझ में कुछ आकर्षण का भान हुआ और आत्मशक्ति भी बलवान हो गई। परन्तु श्री युगल सरकार के अधिक तेज एवं प्रकाश के कारण मेरी आँखें चौंधिया गईं मैं इसको सहन न कर सका, इसलिये अधिक प्रसन्नता के कारण मूर्छित हो धरती पर गिर पड़ा। तो मन को हरने वाली मन्द-मन्द मुसकान द्वारा श्री किशोरी जू ने मुझे सावधान कर उठाया, और अपने मीठे वचनों द्वारा मेरे मन को हर लिया, मैं उस समय रोते-हँसते हुये अपनी हार्दिक अभिलाषा को इस प्रकार श्री युगल सरकार से निवेदन करने लगा। सरकार ! मैंने सन्तों द्वारा सुना है कि भगवान से जोड़ा हुआ बहिन-भाई, सार-बहनोई, माता-पिता, दास-दासी, स्वामी-सेवक, सखा-सखी आदि का कोई भी दिव्य नाता कदापि टूट नहीं सकता, वह सदैव अविकल, अचल एवं अटल बना रहता है, ऐसा ही धर्म शास्त्रों का मत भी सुनने में आया है; क्या यह सत्य है ? यदि धर्म शास्त्र सत्य हैं, तो फिर आप मुझे त्याग कर संसारी जाल में फँसा अपने संग में क्यों नहीं

Scanned by CamScanner

ले गये बहिन ! क्या मैं आपका भैया नहीं या श्री रामजी का साला नहीं हूँ ? यदि हूँ तो फिर मुझे त्याग कर मेरी प्रार्थना को विफल क्यों कर रहे हैं ? इस समय मेरा जीवन अन्धकार और प्रकाश के संगम पर है, न जाने होनहार क्या है ? आपकी भोलीभाली सूरत की याद कर रोते-रोते मेरी तो आँखों के आँसू भी चुक गये हैं ! अब मुझे किसी संसारी वस्तु की न तो चाहना है, न ही किसी दूसरे की सहायता की आवश्यकता।

"इमदाद चाहिये न कोई साथ चाहिये ।
सिर पर केवल युगल हाथ चाहिये ॥"

सज्जनो ! श्री युगल सरकार पहिले तो कुछ संकुचित हुये, इधर श्रीराम जी टाल मटोल करने लगे; परन्तु सच्चा आग्रह एवं जिज्ञासा को टालना सहज नहीं था। कुछ तो दया से पीड़ित होकर एवं कुछ अपनी प्रतिज्ञा का नियम भंग होते देख पहिले तो मेरे प्राणाधार बहनोई श्री रामजी ने मुझे बरबस उठा अपने गले से लगा, हाथ मिला, अपने पास बिठला कर आश्वासन देते हुये धैर्य एवं अभय प्रदान करके मेरे दुखी चित्त को शान्त एवं सुखी बना दिया। तत्पश्चात् दयासागरी लाड़ली बहिन श्री सिद्धकिशोरी जू ने मुझे स्नेहपूर्वक अपनी स्नेहमयी गोदी में बैठा कर पुचकारा, दुलारा फिर अपने आँचल से मेरे आँसुओं को भी पोंछा, परन्तु आँसुओं के पोंछने से क्या होता था, कारण कि हृदय का दुख निकले बिना आँसू बाहरी कपड़े के पोंछने से कैसे सूख सकते थे ? तब कृपा सागरी जू अपने दयालु, सुशील स्वभाव के अनुसार विविध भाँति से सान्त्वना देती हुई मेरे हृदय को शान्त एवं निर्मल बना कर तब आप बोलीं। भइया ! घबराओ नहीं, अब तो आपके मन से

Scanned by CamScanner

समस्त कचाई, चिन्ता तथा ग्लानि हटकर मोहजनित शोक का भी परित्याग हो गया है, अब दुःख के दुर्दिन तुम्हारे समीप न आने पावेंगे। हर्ष चाँदनी छिटकेगी, तुम्हारे वैरीदल की आशा कभी सफल न होगी। और यह भाग्य की बात समझो कि आपको हमारा दर्शन हो गया। इस प्रकार से श्री सिद्धकिशोरी जू कृपा वारि की वृष्टि करके, अपने स्नेहामृत से भिगोती हुई फिर बोलीं भैया! राजकुमारों को तो धैर्यवान होना चाहिए, फिर आप क्यों इतने अधीर तथा शोकाकुल हो गये। दुख सुख तो सब पर बीता ही करते हैं, सदा एक रस किसी की नहीं बीती।

मुझ में सब शक्ति है, भैया! मैं सब कुछ करने कराने में परम समर्थ हूँ। किन्तु आप के श्री गुरु महाराज के वचनों को मैं अन्यथा करना नहीं चाहती। उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि तुम सात वर्ष तक स्थानीय कार्यों की देख रेख तो अवश्य करते उसके बाद जैसी तुम्हारी रुचि हो वैसे ही करना। यदि तुम्हारा मन माने तो स्थान में रहना, नहीं तो जहाँ इच्छा हो वहीं जाकर निवास करना, इसी में तुम्हारी भलाई है। भैया जी! आपको तो गुरु महाराज ने कई वार समझाया था, क्या आप अभी से उसको भूल गये? अच्छा तो अब आपके स्थान एवं कालेज के समस्त सेवा भार को मैं स्वयं सात वर्ष के लिए अपने माथे लेती हूँ। तुमको केवल निमित्त मात्र ही यहाँ रहना पड़ेगा! यदि आप अपना कल्याण चाहते हैं तो श्री गुरु महाराज की आज्ञा को प्रसन्नतापूर्वक पालन करते हुये सात वर्ष तक इस स्थान में रह कर सरकारी सेवा कर लो। भइया! मैं सत्य कहती हूँ कि इस अवधि के समाप्त होते ही मैं तुमको समस्त बन्धनों से मुक्त कराकर अपने ही पास (श्री जानकीघाट) बुला कर रखूँगी। तब आप स्वतंत्ररूप से विचरते हुये दर्श-पर्स एवं भजन पूजन तथा लीलाबिहारी

स्वरूपों के लाड़-प्यार के सुख एवं आनन्द का अनुभव करते हुये श्री अवधवास का लाभ उठाना। भइया! आप का कथन भी ठीक है, कि संसार में नश्वर भोग-पदार्थों एवं मोह माया के जंजाल में फँसने से किसी को शांति नहीं मिलती, तथापि मैं आपको हार्दिक आशीर्वाद देती हूँ कि तुम किसी भी संसारी प्रलोभन में न फँस कर मोह माया के जाल में फँसने से भी बचे रहोगे। अब तुम्हारे मार्ग के काँटे विवेकरूपी बुहारियों से साफ़ होकर जीवनसंग्राम का पथ भी साफ़ और सुथरा होता रहेगा। इसलिए यदि अपनी भलाई और कीर्ति चाहो और मुझे अपनी बहिन मानते हो तो मेरे वचनों को सत्य मान कर दृढ़तापूर्वक निर्भय होकर स्थान की देख-भाल आरम्भ कर दो। मैं हर समय तुम्हारी रक्षा करूँगी।

सज्जनो! बस इतना कहते-कहते जैसे बादलों में बिजली चमक कर अदृश्य हो जाती है, ठीक उसी प्रकार क्षणभर में लीलाधारी श्री युगल सरकार अपनी अनुपम छटा दिखाकर एवं मेरा धैर्य बँधा कर यह गये वह गये, न जाने फिर कहाँ अदृश्य हो गये, और मैं छटापटा कर देखता ही रह गया। मेरी कुंज जो उस समय चमचमा उठी थी, वह बिल्कुल अँधेरी कोठरी हो गई। श्री युगल सरकार के दर्शनों, संतोषप्रद वचनों एवं उनके आशीर्वाद के प्रभाव से मेरे हृदय का समस्त खेद एवं दुख-दर्द जाता रहा। मेरी हर प्रकार की कचाई व ग्लानि भी मिट गई, अब तो अन्तर आह्लाद के कारण चित्त में उत्साह एवं बल भी अधिक प्रतीत होने लगा। अहा! मैं कह नहीं सकता कि श्री युगल सरकार की उस कोमल वाणी में कितना रस, कितनी मिठास, कितना स्नेह एवं कितनी समवेदना भरी थी। इन्हीं सब बातों का ध्यान एवं मनन करते-करते सवेरा हो गया। मैं स्नान ध्यान नित्य नेम आदि से छुट्टी पाकर सरकारीकृपा

Scanned by CamScanner

का सहारा हृदय में धारण कर उनकी आज्ञा पालनार्थ निर्भय होकर दृढ़तापूर्वक कार्य में डट गया, और श्री युगल सरकार के चित्रपट एवं श्री गुरुदेव जी के पादुकाओं को ही अपना आधार मान कर, और हर प्रकार की असमञ्जस के समय उनके ही सम्मुख चिट्ठी द्वारा आज्ञा प्राप्त कर स्थानीय कार्य करने लगा।

सज्जनो ! समय पर कहना ही पड़ता है कि पाप के सर्पों का विष जब भयंकरता से मनुष्य के ऊपर चढ़ बैठता है तो उनकी बुद्धि भी विपरीत हो जाती है। उन्हें ईर्षा द्वेष के कारण धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य एवं लोक-परलोक तक किसी का भी भय नहीं रह जाता, वह तो पाप कार्य करने से अपने ऊपर आने वाली घोर घटनाओं को भी भूल जाते हैं। ऐसे लोग जाल तो बिछाते हैं दूसरों को फँसाने के लिए, परन्तु फँस जाते हैं स्वयं। इसलिये ऐसे स्वार्थी लोगों को धर्मयुक्त न्याय-संगत बातों से मतलब ही क्या ? भगवान के दरबार में अन्याय कभी न होकर न्याय ही होता है, मगर हाँ ! देर सवेर की बात दूसरी है। उन्हें यह भी मालूम नहीं रहता कि भगवान के दरबार में किसी पदार्थ, धन-दौलत की भेंटस्वरूप में ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, पाठको ! वहाँ तो केवल सत्य एवं भगवत् स्वरूप प्राप्ति की लगन लेकर जाने से ही कुछ प्राप्त हो सकता है।

इधर स्थान करवी माफ़ी में कुछ स्थानीय धार्मिक नियम भंग होते देख तथा अपने स्वभाव से भी लाचार होने के कारण मैंने अपने गुरुभाइयों के कुछ प्रस्तावों का उनकी रुचि अनुसार समर्थन नहीं किया, बल्कि श्री गुरु महाराज जी की प्रेरणा द्वारा श्री युगल सरकार के भरोसे पर ही अन्त समय तक उसका विरोध ही किया, जिसके फलस्वरूप मैं उनके मार्ग का कंटक बन गया। इसलिये मुझ निरपराधी पर भी उनकी

Scanned by CamScanner

निगाह टेढ़ी हो गई। मेरी श्री सिद्धकिशोरी जू में अटूट श्रद्धा थी तथा दृढ़ विश्वास हो चुका था कि वह सदा मेरे साथ रहती हुई निरन्तर मेरी सहायता (रक्षा) भी करती हैं। इधर श्री गुरु महाराज के वचनों में भी मेरी पूर्ण श्रद्धा एवं धारणा थी, श्री गुरु महाराज कहा करते थे :—

रण, बन, आपत्ति, बिपत्ति में वृथा डरे जनि कोय।
जो रक्षक जननी जठर, सो हरि गयो न सोय॥
जो तो कों काँटा बोय, ताहि बोय तू फूल।
तो कूं फूल को फूल हैं, वाको हैं तिरशूल॥

"जिसके रक्षक श्री राम, उसको सभी करें प्रणाम।" जिस पर भगवान की कृपा होती है; जो कोई एक मात्र भगवान की शरण ले लेते हैं, उनको मिटा देने या हानि पहुँचाने के निमित्त किसी भी धन-जन की शक्ति कुछ काम नहीं कर सकती। देखिये! पाँडवों की रक्षा करते हुये भगवान ने तो यहाँ तक प्रत्यक्ष दिखला दिया है कि जो कोई समस्त आसरों को छोड़ कर एक मात्र मेरी ही शरण ले लेते हैं, मैं उनके लिये सब कुछ करने कराने और सब कुछ बनने बनाने को तैयार रहता हुआ जहाँ जैसा भी अवसर देखता हूँ, वहाँ वैसा ही बन भी जाता हूँ। न तो मुझे मान का ध्यान रहता है और न ही अपमान का। तभी तो "कहीं बने नन्द नन्दन कहीं बने नाई नन्दा"

काल के प्रभाव से स्थान में कई प्रकार के भले बुरे परिवर्तन हो गये। बहुत उलट फेर हुये, अनेक प्रकार की संकटपूर्ण स्थितियों एवं काल की कठिन बाधाओं का निरन्तर सात वर्ष तक मुझे भी सामना तो करना पड़ा। परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी ने स्वयं सात वर्ष के लिये समस्त स्थानीय भार अपने ही मत्थे ले लिया था, मुझे तो केवल निमित्त मात्र ही बना रखा था,

Scanned by CamScanner

तब भला किसका साहस था कि हानि पहुँचा सके। इसलिए कोई मेरा अनहित न करके मुझे किसी प्रकार की हानि भी न पहुँचा सका। मैं तो सरकार की असीम कृपा द्वारा साफ़-साफ़ और बेदाग़ बच गया, किसी में शक्ति न हुई कि मेरा बाल भी बाँका कर सके। सज्जनो! यह है श्री सिद्धकिशोरी जू की सिद्धाई का अपूर्व चमत्कार एवं प्रभाव। यों तो भगवान बड़े उदार, दयालु और कृपालु हैं, वह किसी का कभी बुरा नहीं चाहते, वह तो प्रत्येक जीव के देखने की निरन्तर अभिलाषा ही किया करते हैं। उनकी प्रत्येक प्राणियों पर सर्वदा कृपादृष्टि ही रहा करती है। किन्तु मैं तो अपने को सबसे विशेष भाग्यशाली मानता हूँ। आज यद्यपि श्री सिद्धकिशोरी जी स्थूलस्वरूप से मेरी दृष्टि से ओझल हैं, किन्तु इसमें संदेह नहीं कि उनकी कृपा नाना प्रकार के अन्धकार में मुझे आज भी प्रकाशपथ पर अग्रसर करती है। मेरी चिरसेवित मनोकामना कुछ अंश में तो सफल हुई। यदि इस आशा के बल पर मुझे संतोष नहीं तो धैर्य तो अवश्य है, एवं विश्वास है कि शेष भी (श्री साकेत धाम का वास) अब की बार पूर्ण हो ही जायगा।

पाठको! ज़रा सरकारी प्रतिज्ञा को तो देखिए। श्री सिद्ध-किशोरी जी ने अपनी प्रतिज्ञानुसार सात वर्ष की अवधि समाप्त होते ही स्थानीय समस्त झंझटों से मुक्त कराकर मुझे आदरपूर्वक श्री अयोध्या जी में अपने ही समीप बुला तो लिया। श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम कृपा द्वारा मैं इस जंजाल से पार होकर उनके श्री चरणों तक पहुँच गया, यह मेरे हर्ष के लिये क्या कम है?

❀ श्री अवध-वास ❀

(१०२) पाठको ! ज़रा इस घटना को भी देखें। स्थान कर्वी (चित्रकूट) में सात वर्ष की अवधि व्यतीत होने के अति निकट एक अनुचित स्थानीय बँटवारा (Partition compromise) दोनों गुरुभाइयों में हुआ। इसका विरोध करते हुये ऐसी असमञ्जस में मैंने श्री सिद्धकिशोरी जू के चित्रपट के सामने दो चिट्ठियाँ लिख कर रखीं, (एक में लिखा था कि स्थान में रह कर इसका विरोध करो; दूसरे में श्री अयोध्या जी जाने का प्रस्थान) जब आँख मूँद कर चिट्ठी उठाई तो श्री अवध जाने की ही चिट्ठी निकली। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और तुरन्त मैंने श्री अयोध्या जाने का प्रस्थान भी कर दिया। उस समय कर्वी की जनता के अतिरिक्त चित्रकूट की जनता एवं संत महन्तों और सज्जन पुरुषों ने, यहाँ तक कि कर्वी-बाँदा के अहलकार एवं हाकिमों ने भी मुझे कर्वी स्थान छोड़ कर बाहर जाने से रोका, और बाध्य किया कि स्थान में ही रह कर भजन करो। परन्तु मैंने उत्तर दिया कि भला बताइये तो सही कि जिन श्री किशोरी जी की कृपा द्वारा ही मैं इन भारी जञ्जालों से बिना प्रयास पार होकर इस संसार में अब तक जीवित रहा हूँ, जिन्होंने सात वर्ष तक समस्त स्थानीय भार अपने माथे पर लिया और जो मेरे जीवन की संरक्षक हों, तो भला मैं उनकी (चिट्ठी द्वारा प्राप्त) आज्ञा को भंग कैसे कर सकता हूँ। इसलिए मैंने अपना अन्तिम निर्णय श्री सिद्धकिशोरी जू की आज्ञा को ही शिरोधार्य करके कर्वी स्थान को अन्तिम प्रणाम करते हुये ता० १६-६-१९४६ को श्री अयोध्या जी के लिये प्रस्थान कर दिया, जिसे १२ वर्ष से अधिक हो चुके हैं।

Scanned by CamScanner

पाठको ! यदि श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा न होती, अर्थात् मुझे श्री अवध के लिये प्रेरणा न करतीं, और गुरुभाई मेरा स्वागत सत्कार करके स्थान में ही मुझे रख लेते; तो सम्भव था, कि मैं जीवन भर उन्हीं के यहाँ फँसा रहता, एवं समय पड़ने पर उनके अन्यायों का समर्थन मुझे भी करना पड़ता। परन्तु मेरे ऊपर तो श्री किशोरी जू की विशेष कृपा हुई है जिस के कारण आनन्दपूर्वक श्री अवध में निवास करते हुये समय-समय पर अन्य तीर्थों में भी विचरने का सौभाग्य प्राप्त हो जाया करता है। तब से मैं स्थान में फिर कभी भी नहीं गया। अब जरा इसे भी तो सुन लीजिये, कि श्री किशोरी जू ने कर्वी स्थान से मुझे बुला कर फिर रखा कहाँ ? अपने ही स्थान श्री जानकी घाट में। और मेरे जीवन का संरक्षक किस को बनाते हुये मेरा हाथ किसको सौंपा ? संत शिरोमणि वीतराग पूज्यपाद श्री वैष्णव समाज के उज्वल जगमगाते रत्न न्याय, वेदान्त, व्याकरण, मीमांसा आचार्य, पंडित श्री रामपदार्थदास जी महाराज (श्री वेदान्ती जी) श्री जानकी-घाट श्री रामवल्लभा कुंजाधीश को। जो कि महान बड़भागी; भगवत् चरणारविन्द अनुरागी, प्रातः स्मरणीय साधु भूषण, पूज्यपाद अनन्त श्री पं० रामवल्लभा शरण जी महाराज के चरण कमलों के पराग सेवी हुये।

सज्जनो ! श्री गुरुदेव की असीम कृपा एवं आशीर्वाद द्वारा आपका व्यावहारिक एवं पारमार्थिक जीवन दोनों अकथनीय हैं। आप का सदाचार, सरल स्वभाव, उदार-चित्त एवं साधु सेवा यह सद्गुण तो परम प्रशंसनीय हैं; आप ने योगाभ्यास के अलावा, नेती धोती, प्राणायाम, एवं खेचरी आदि की विद्या में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की है। आपका यह सुन्दर विचार कि "सम्पत्ति सब रघुपति की आही" इसको इस प्रकार समझना आप जैसे किसी विरले बड़भागी एवं गुरु के लाल का ही काम है।

Scanned by CamScanner

आप का साधुसेवा के अतिरिक्त अभ्यागत एवं अतिथि सेवा में भी भारी प्रेम है। आप समस्त सद्गुण सम्पन्न एवं कई विषयों के विद्वान, परम आदरणीय, विरक्त, श्री वैष्णव संत हैं। आप एक परम कुलीन सरजूपारीण ब्राह्मण घराने में से हैं। आप घर में भी धनधान्य से भली प्रकार सम्पन्न थे, और यहाँ भी किसी प्रकार की कमी नहीं है। आप अपनी आय में से अपने निजी काम में एक पैसा भी व्यय न करके समस्त धन को भगवत्-भागवत की सेवा में ही खर्च कर देते हैं। अहा! जिनकी पूज्य माता श्रीराम भक्त हों, जिनका पचीस हजार श्री सीताराम नाम प्रतिदिन जपने का दृढ़ नियम रहा हो, तो भला उनके सुपुत्र भी क्यों न श्री राम भक्त होंगे? यही कारण है कि आपका भी बाल्यकाल से ही श्री सीताराम जी में प्रेम था। आप भगवान का भजन, कीर्तन, यहाँ तो प्रतिदिन करते ही हैं, परन्तु बाल्यकाल से ही घर में भी किया करते थे। श्री जानकीवल्लभलाल जू के प्रेमसागर में निरन्तर अटूट श्रद्धा विश्वासयुक्त गोते लगाते-लगाते आपकी बुद्धि अति स्वच्छ एवं निर्मल हो चुकी है, आप दूसरों के दुःख को भी अपना ही दुःख जान कर उनके अभ्युदय के निमित्त भगवान से प्रार्थना भी करने लगते हैं। क्यों न हो! आप तो दया के एक उछलते हुये सागर ही हैं, आप में गम्भीरता एवं नम्रता तो मानो कूट-कूट कर भरी है, इतनी भारी योग्यता प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान होने पर भी आप में अभिमान तो लेशमात्र भी दिखाई नहीं पड़ता। कई बार का अनुभव है कि आप स्वयं अमानी रह कर एक साधारण मनुष्य तक का भी सम्मान (आदर-सत्कार) करने से नहीं चूकते। आप की भगवत् भावना एवं निष्ठा भी विचित्र ही है, जो कि अति प्रबल होने के कारण इतनी उच्चकोटि में पहुँच चुकी है, कि जिसको यह जड़ लेखनी

Scanned by CamScanner

लिखने से लाचार है। क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता; परन्तु समय आने पर कुछ कहे बिन रहा भी नहीं जाता। अहा ! श्री रामजन्म भूमि के विषय में आपके मुख से निकले हुये स्वर्ण अक्षरों से लिखे जाने योग्य उन अनमोल शब्दों का भला ऐसा कौन अभागा जड़ जीव होगा, जो सच्चे हृदय से आदर सम्मान न करेगा और उन्हें भूल जायगा ?

आप ने एक समय भरी सभा में अपना भाषण देते हुये प्रतिज्ञापूर्वक कहा था कि श्री राम जन्मभूमि के मन्दिर से अब श्री रामलला जी को हटाना लोहे के चने चबाना है। देखें! कौन अपनी माई का जाया लाल है जो मन्दिर से भगवान को हटाने का साहस दिखाये। भगवान के लिये तो मेरा तन, मन, धन, स्थान और सर्वस्व अर्पण है। केवल इतना ही नहीं, यदि मेरे तन का अचला और लँगोटी भी भगवान के लिये बिक जाय, तो मुझे कोई दुख और लज्जा न होगी। आप की दूसरी प्रतिज्ञा यह भी थी कि यदि किसी समय बलिदान की आवश्यकता आन पड़ी तो उस धर्म कार्य के लिये सर्वप्रथम मेरा ही तन भगवान के श्री चरणों में भेंट होगा। अहा ! आप धन्य हैं। भगवत्-भागवत् के लिए आपकी इस प्रकार की भक्ति एवं सुन्दर भावना को देख सुन कर चकित एवं अवाक् हो जाना पड़ता है। वर्तमान काल के आप एक महान प्रसिद्ध वीतराग महानपुरुष हैं। आपके प्रभाव एवं सिद्धि चमत्कारों को देख सुन कर बड़े-बड़े हाकिम, अहलकार, राजा-महाराजा एवं रईस भी आपका आदर सम्मान करते हुए आपके सतसंग द्वारा लाभ उठाकर पूर्ण मनोरथ होते हैं। प्रति-वर्ष हजारों मनुष्य आपके शिष्य भी होते रहते हैं।

आप तो बड़े भाग्यशाली, प्रभावशाली एवं अग्रसोची भी हैं। आप ने यह ख्याल करते हुये कि शरीर तो अनित्य है, इस

Scanned by CamScanner

दम का कोई भरोसा नहीं, इसलिये कहीं ऐसा न हो कि साकेत-वासी श्री गुरु महाराज की संकल्पमयी अभिलाषा (नवीन मन्दिर का निर्माण) उनके मन ही मन में रह जाय। इसलिये आप ने कई वर्ष हुये इसकी पूर्ति करके श्री गुरु महाराज की रुचि से भी कहीं अधिक कार्य कर दिखाया। अहा ! इस नवीन मन्दिर का कहना ही क्या ? मन्दिर तो अति सुन्दर, विशाल एवं नई शैली का लासानी ही बना है, जिसको देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। इसके साथ-साथ अनन्त श्री जानकीवल्लभ लाल जू की अपूर्व अनुपम मनमोहनी सुन्दर छटायुक्त श्री युगल झाँकी का तो वर्णन ही कौन कर सकता है, जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य आनन्दसिन्धु में निमग्न हो जाता है, और ऐसा मालूम पड़ता है कि साक्षात् श्री सीताराम जू अभी-अभी श्री साकेत दिव्यधाम से यहाँ पधारे हैं। कई प्रेमीजनों को तो दर्शन करते मात्र श्री लीलाबिहारी स्वरूपों का ही भान होने लगता है। भगवान के निमित्त गंगाजमुनी सिंहासन भी ऐसा लाजवाब (अद्वितीय) ही बना है कि कुछ कहते नहीं बनता, केवल देखते ही बनता है, जिसको दो सिंहों ने उठा रखा है। अनेक प्रकार के अतलस, कीमखाव, रेशम, मखमल आदि के रंग-बिरंगे वस्त्र, सुन्दर-सुन्दर स्वर्ण एवं मणि जटित आभूषण, किरीट, मुकुट चन्द्रिकादि तथा स्वर्ण एवं रजत पात्र, पार्षद, एवं खेल खिलौने तो इतने हैं कि जिनकी कोई गणना ही नहीं। अब ऐसा मन्दभागी संस्कारहीन पुरुष कौन होगा, जिसको श्री भगवान, उनका मन्दिर एवं सिंहासन इत्यादि अच्छे न लगेंगे, और जो भगवान के शुभदर्शन मात्र से गद्गद् होकर हर्षित न होगा।

सज्जनो ! केवल मन्दिर का निर्माण ही नहीं, इसके अतिरिक्त भगवान के लिये प्रतिदिन बालभोग, राजभोग तथा ब्यारूभोग का सुन्दर प्रबन्ध और दो ढाई सौ अभ्यागत, अतिथि की नित्य

Scanned by CamScanner

प्रति की सेवा, समइया-उत्सव, पाठशाला और उनके विद्यार्थियों का भोजन, गौशाला, आगन्तुक, सती-सेवकों का सत्कार होना तथा अनेक धर्मसंस्थाओं में आप का सभापति पद को ग्रहण करते हुये अन्य प्रदेशों में भी जा-जाकर अपने अपूर्व मार्मिक उपदेशों द्वारा जनता को कृतकृत्य करना, क्या यह आपकी भक्ति, प्रेम, उदारता, दयालुता, साधुता ,त्याग एवं विद्वता को प्रकट नहीं करता ? मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि इन परमार्थिक एवं धार्मिक कृत्यों को देख-देख कर आपके श्री गुरुमहाराज जी को परम सन्तोष एवं सुख-शान्ति प्राप्त होती होगी। यही कारण है कि उनके आशीर्वाद द्वारा ही आप यह समस्त स्थानीय कार्य (बिना किसी बन्धानी आय के) पूर्ण रीति से चला रहे हैं, जो कि एक मनुष्य की तो क्या कहें, राजा महाराजा की शक्ति से भी बाहर की बात है।

सज्जनो ! मुझे १२ वर्ष श्री जानकीघाट अपनी बहिन "श्री किशोरी जू" की छत्रछाया में रहते हुये व्यतीत हो रहे हैं. जिस प्रकार आनन्द, सुख, शान्ति, स्वतन्त्रता एवं मान-सम्मान मुझे यहाँ प्राप्त हुआ है, उसके लिये मेरे पास शब्द ही नहीं हैं जो मैं यहाँ लिख सकूँ। इसके अतिरिक्त जितनी भी दया, अनुकम्पा, उदारता, स्नेह, प्रेम एवं देख-रेख श्री बहिन की इस भैया पर निरन्तर रहा करती है, वह तो अकथनीय है। इसके उपलक्ष में मेरे पास केवल एक हृदय को छोड़कर और है ही क्या जो अपनी बहिन के श्री चरणों में भेंट करूँ। वह हृदय भी तो बहनोई श्रीराम जी ने ही चुरा रखा है !

पाठको ! अब मैं अपने नित्य पूज्यास्पद जीवन के संरक्षक प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद "श्री वेदान्ती जी महाराज" का भी आजन्म ऋणी हूँ, जिन्होंने मेरे लालन-पालन तथा लाड़-प्यार में

Scanned by CamScanner

कोई कसर बाकी न रख कर मुझे श्री युगल सरकार श्री सीता-राम जी महाराज के दर्शन एवं उनके अनुपम चरित्रों के अवलोकनार्थ ही पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। मैं आप के इन उपकारों का बदला कभी चुका ही नहीं सकता।

मैं आपकी क्या सेवा तथा भेंट करूँ। आप तो धन के नहीं केवल प्रेम के ही भूखे हैं। इसलिये मैं जब तक इस मृत्युलोक में जीवित रहूँगा तब तक आपकी एवं श्री बड़े महाराज जी की जय-जयकार मनाता रहूँगा। इसके साथ-साथ आपकी दीर्घायु हो; आपका मंगलविग्रह निरन्तर सुखी बना रहे, इसके लिये भी मैं निरन्तर श्री युगल सरकार से प्रार्थना करता रहूँगा।

❀ श्री अवध की एक विचित्र घटना ❀

श्री चित्रकूट से श्री अयोध्या जी पहुँचने के कुछ ही दिनों पश्चात्, जब कि एक दिन मैं श्री सिद्धकिशोरी जू के विछोह से अत्यन्त व्याकुल दशा में पड़ा-पड़ा उनकी याद में कुछ आँसू बहा रहा था। मुझे दुखी देख कर श्री किशोरी जी ने उसी रात को स्वप्न द्वारा मुझे आज्ञा दी भैया जी। आप नित्यप्रति श्री कनकभवन (महल) में जाकर दर्शन कर आया करो तो हमारी झाँकी की झलक उसी मन्दिर की श्री किशोरी जू की मूर्ति में मिलने से आप को परमसुख एवं शान्ति प्राप्त होगी। यह सुनते ही मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ, और मैं श्री किशोरी जू की प्रेरणा अनुसार अब तो प्रतिदिन महल में दर्शनार्थ जाने लगा। वास्तव में मुझे उनके दर्शनों से भारी सुख एवं आनन्द मिलने लगा; यहाँ तक कि कभी-कभी अधिक समय बैठ कर जब मैं ध्यान करने लगता, तब तो श्री सिद्धकिशोरी जू की

Scanned by CamScanner

मनोहर छवि की कुछ झलक भी उनमें प्रतीत होने लगती।

इधर लगभग ६ वर्ष हुये हैं कि दुर्भाग्यवश मैं कालाज्वार बुख़ार के कराल पंजे में फँसा। पूज्य श्री "वेदान्ती जी" महाराज की कृपा, देख-रेख, एवं सुन्दर उपचार करने-कराने से मैं किसी प्रकार कराल काल के गाल में जाने से तो बच गया। परन्तु मेरा शरीर इतना दुर्बल एवं कृश हो गया, कि मुझे बाध्य होकर कई दिनों तक श्री कनकभवन जाने का नियम भी भंग करना पड़ा। इधर दर्शन न होने के कारण फिर मुझे श्री सिद्धकिशोरी जी की याद सताने लगी। इसलिये फिर विवश होकर श्री सिद्धकिशोरी जी का मानसिक ध्यान करते हुये उनके ही चित्रपट के सम्मुख प्रेमपूर्वक करबद्ध मुझे प्रार्थना करनी पड़ी। हे दयासागरी जू! शरीर की अत्यन्त दुर्बलता के कारण मैं श्री कनक-भवन तक जाने से असमर्थ हूँ। वहाँ न जाने से आप के शुभदर्शनों से वञ्चित रह कर मेरा चित्त दुःखी एवं चिन्तित होने लगता है। अब क्या उपाय करूँ जिससे चित्त का दारुण दुःख एवं संताप दूर हो। आहा! दयासागरी श्री बहिन जी की कृपा का क्या कहना। उन्होंने अपने दयालु स्वभाव-वश तुरन्त उसी रात को फिर स्वप्न द्वारा मुझे यह प्रेरणा की कि अब प्रतिदिन कनकभवन न जाकर अपने ही निवास स्थान श्री जानकीघाट (श्री रामवल्लभा कुंज) में ही अनन्त श्री जानकी-वल्लभलाल जू के शुभदर्शन कर लिया करो। तुमको उन्हीं में हमारा भी दर्शन प्राप्त होकर तुम्हारे मन को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी। और यह भी कहा कि सुख-दुःख तो पूर्व कर्मों का भोग है, इसको भोग लेना ही अच्छा है, घबराना नहीं चाहिये।

पाठको! अब तो मैं प्रतिदिन श्री कनकभवन में न जाकर नित्य अपने मन्दिर में श्री जानकीवल्लभलाल जू के ही दर्शन करने लगा। सचमुच श्री सिद्धकिशोरी जू के कथनानुसार मुझे

Scanned by CamScanner

तो इनके दर्शनों से चित्त को भारी शान्ति और सुख प्राप्त होने लगा। कभी-कभी तो श्री सिद्धकिशोरी जू की आभा एवं झलक भी इन्हीं में दिखाई पड़ने लगती। इधर ६-७ वर्ष हुये, कि जब मैं कलकत्ता में मोटरकार के नीचे दब जाने पर भी साफ-साफ बच गया था, तो क्या यह श्री किशोरी जी की असीम अनुकम्पा न थी, तो और क्या था ? यद्यपि वहाँ के डाक्टरों ने कह दिया था कि भइयाजी का बचना असम्भव है, कारण कि फेफड़े की चोट बड़ी खतरनाक थी। परन्तु श्री किशोरी जू के लीलास्वरूप ने उस समय मुझे आशीर्वाद देते हुये कहा था "भैया जी ! आप चिन्ता किसी बात की न करें, आप पाँच-सात दिन में अच्छे हो जायेंगे।" सज्जनो ! ठीक हुआ भी ऐसे ही।

श्री गया जी में श्रीरूपकला हरिनाम यशसंकीर्तन सम्मेलन के पश्चात् बिहौतीसमाज को चम्पारन की तरफ़ किसी निमंत्रण में जाना था। समाज के श्री युगल सरकार ने सम्मेलन के सभापति श्री वेदान्ती जी महाराज से मुझे भी एक महीने के लिये अपने साथ ले जाने के निमित्त मेरी याचना की, कि भैया जी को हम अपने साथ ले जायँगे। श्री वेदान्तीजी महाराज ने अपने सरल हृदय अनुसार तुरन्त मेरा हाथ पकड़कर श्री युगल सरकार को सौंप दिया, तो मुझे सरकारी सेवा में जाना ही पड़ा। फिर एक मास की कौन कहे, मुझे लगभग छः मास तक श्री जानकीघाट स्थान से पृथक रह कर उन्हीं के साथ-साथ देशाटन करना पड़ा। अब तो इधर श्री जानकीघाट कुंज निवासिनी श्री किशोरी जू से जब मेरा अधिक बिछोह सहन न हो सका, तो श्री वेदान्ती जी महाराज को (श्री वशिष्ठ जी) मन्दिर की श्री किशोरी जू ने २७/४/१९५२ की रात्रि के समय स्वप्न में प्रेरणा करते हुये मुझे कानपुर में पत्र भेजने की आज्ञा प्रदान की। श्री किशोरी जी की प्रेरणानुसार तुरन्त २८/४/१९५२

Scanned by CamScanner

को पूज्य श्रीवेदान्ती जी ने मेरे पास कानपुर में दो पत्र भेजे थे, जिन को मैं नीचे अक्षरशः उद्धरित करते हुये भावुक प्रेमीजनों को केवल इतना दिखाना चाहता हूँ कि हृदय देशवासी वह परम प्रियतम ही प्रेमदेव है, एवं निस्वार्थ प्रेम में कितना भारी बल होता है, इसको भी जरा देख लें। प्रेम का तो तत्व ही कुछ ऐसा दिव्य है, कि वह जिस हृदय में विकसित होगा, उसे दिव्य ही बना देगा। एवं दिव्य नायक पुरुषोतम की ओर कभी न कभी अवश्य खेंच कर ले भी जायेगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। केवल आवश्यकता है, भगवान के प्रति अटल विश्वास, अटूट श्रद्धा, सच्ची तड़प, अचल प्रेम, दृढ़ लगन एवं सच्ची भावना की! जिस किसी भी मनुष्य को इस बात का पक्का विश्वास हो जाता है कि मैं सर्व शक्तिमान सर्वाधार विश्वपति भगवान की शरण होकर उनका एक जन होते हुये उन्हीं की छत्र छाया में हूँ। एवं अपने प्रीतम को ही वह अपना जीवन धन बना लेता है। तब तो विवश होकर ऐसे प्रेमी हृदय को भगवान श्री सीताराम जी अवश्य खींच ही लेते हैं, चाहे वह कहीं पर भी क्यों न हो, वे इसके बड़े ग्राहक हैं। सज्जनो! दृढ़ विश्वास ही सफलता की कुंजी एवं विजय का मूल मंत्र है। यही भगवान को अपने समीप खींचने वाला चुम्बक समझो।

प्रेमियों की दुनिया उलटी हुआ करती है। गृहस्थ जीवन में श्री तुलसीदास जी ने प्रेम की मस्ती में नदी के बहते हुये एक मुरदे को नौका ही समझ कर उसी के सहारे अपना रास्ता भी तै किया था; और छप्पर से लटकते हुये सर्प को ही रस्सी समझ उसे पकड़ते हुये वह अपनी प्रिया के शयनागार में भी जा पहुँचे थे। बरसात की अँधेरी रात, वर्षा की तूफानी बूँदें, एवं पवन के प्रलयकारी थपेड़े तुलसीदास जी के हृदय में बढ़े हुये तूफान के आगे सब बेकार हुए। जरा और भी देखिए :—

भगवान को प्रेमपाश में बाँधने के अनेक उदाहरण हैं, श्री द्रौपदी जी, कुब्जा जी एवं मीराबाई इत्यादि ने अपने पवित्र प्रेम द्वारा ही तो भगवान को अपने प्रेमपाश में बाँध लिया था। मजनूँ तो लैला का और फरहाद शीरीं का दीवाना बना, दर-बदर की खाक छानी; पहाड़, पानी और पत्थरों से टुकराये; दाने-दाने के लिये दोनों मोहताज बने, अन्त में जब मरने की घड़ी आई तब भी वह अपने प्रेम से बाज़ नहीं आये। आइये ! यह हैं प्रेमी दुनियाँ के नमूने ! आहा ! प्रेम की प्यास में कितनी तड़प है, इसे तो पपीहा ही जानता है, और यह सौभाग्य विरले ही भाग्यवानों को मिलता है।

इश्क क्या शय है किसी सौदाई दिल से पूछा चाहिये ।
और दर्दे दिल क्या है किसी घायल से पूछा चाहिये ॥
वह सिर नहीं जिसमें कि हो सौदा न किसी का ।
वह दिल नहीं जो दिल न हो दीवाना किसी का ॥

जब कि प्रेम का कोई अन्त, सीमा या आर-पार नहीं है तो :—

तोड़ लेखनी फेंक मसी, कागज़ डारो फाड़ ।
प्रेम व्यवस्था जनि लिखो, जाको वार न पार ॥

(१) पूज्य श्री वेदान्ती जी महाराज (श्री वशिष्ठ जी) श्री अयोध्या जानकी-घाट निवासी के तारीख २८-४-५२ के पत्रों की प्रतिलिपि।

परम प्रिय वत्स श्री लक्ष्मीनिधि जी, चिरंजीव ।

यहाँ पर श्री मिथिलेश राजकुमारी बहुत चिन्तित हैं, आप शीघ्र आइये ! नारद जी (एक साधु) से आपकी बीमारी का समाचार सुन करके बहुत उतावली हो रही हैं। इनका सब समाचार ऋषि नारद जी से आपको मालूम हो ही जायगा, बहुत दिनों का विछोह दुखद होता है, यहाँ का और सब समाचार अच्छा है ! आपका अभ्युदय श्री राघो जी से सर्वदा चाहता हूँ ।

द० वशिष्ठ

Scanned by CamScanner

(२) श्री जानकीघाट-मंदिर की श्री किशोरी जी के पत्र ता० २८-४-५२ की प्रतिलिपि, (प्रतिनिधि श्री वेदान्ती जी महाराज)।

श्री मान् प्रिय भैया जी !

(१०४) बीरन ! आप इतने दिन तक मुझे तो कभी नहीं बिसराते थे, क्या भैया जी आप निर्मोही भैया हो गये ? हमारी (जानकीघाट का) कुँज सूना प्रतीत होता है। क्या आप इतने विरक्त हो गये कि बहिन की भी याद नहीं आती। आप मेरे अकेले ही भैया हैं, यदि और भी हमारे दो चार भइया होते तो दूसरों को भी देख कर सन्तोष होता। यद्यपि संसार में सब कुछ है, तथापि बिना बीरन के हम उदास सी प्रतीत होती हैं। भैया जी ! पत्र देखते ही अपने विचार शीघ्र हमारे पास आने का कीजिये। यदि आप नहीं आवेंगे तब मैं अपने पुरोहित को भेजूँगी, भैया निर्मोही न बनो। आप जानते हैं; भैया को बहिन कितना चाहती है। भैया तो अनेक देशों को देखता और मन बहलाता है, एवं मैं घर के अन्दर ही बैठी रहती हूँ, आप ही के चिंतवन से जब आप का स्वरूप सामने आता है, तब भैया हृदय भर आता है। बहुत दिनों तक मुझे न भुलाया जाये। जब मेरा जी बहुत घबराता है तब मेरे जीवनधन, प्राणधन, हृदयतम, रघुवंशभूषण सरकार कहते हैं, हे प्रियतमे ! घबड़ाओ नहीं। मैं शीघ्र तुम्हारे भैया को बुला दूँगा। फिर भैया आप तो जानते ही हैं, कि उनका कितना बड़ा राज काज है वह भूल जाते हैं। अब आप ही स्वयं शीघ्र आइये। मेरा हृदय भर आया, अब मैं नहीं लिख सकती। भैया, भैया, भैया ! आपकी एक बहिन, महलकुंज निवासिनी, श्री अयोध्या राजधानी।

Scanned by CamScanner

श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट का अपूर्व प्रभाव एवं चमत्कार

पाठको ! जिन पर महान पुरुषों की अथवा स्वयं भगवान की ही कृपा हो जाती है तभी वे भक्तिमार्ग में आते हैं। मैं पहिले भी कई बार निवेदन कर चुका हूँ कि "विश्वासो फलदायक: ।" मनुष्य अपनी श्रद्धा एवं विश्वास का बना हुआ पुतला है, जिस का जिस के प्रति जैसा भी विश्वास होता है, वैसा ही उसका वह काम भी बन जाता है।

मैंने जून १९५४ में जब श्री हरिद्वार जी की यात्रा की थी, तो जाते समय कुछ प्रेमी जनों के आग्रह पर मुझे कई दिन तक उनके यहाँ रुकना भी पड़ा। वहाँ के भावुक प्रेमियों ने श्री सिद्धकिशोरी चरितामृत का श्रद्धापूर्वक प्रेम से पान किया। उनमें से कुछ भावुक प्रेमियों की याचना पर मैंने श्री सिद्ध किशोरी जी का फ़ोटो (चित्रपट) भी उनको दे दिया और प्रेमियों ने उस चित्रपट को अपनी पूजा में ही रख लिया। अब जिन जिन सज्जनों को श्रद्धा विश्वासयुक्त पूजा करने से मनोकामनाओं की सिद्धि प्राप्त हुई, उनके कई पत्र भी मेरे पास आये हैं, जिनमें से केवल ४ ही पत्रों के कुछ अंश को मैं यहाँ लिखता हूँ। जिससे भगवत्भक्त एवं विश्वासीजनों के लिये तो कोई आश्चर्यजनक प्रतीत न होंगी, मगर हाँ ! अभगत तथा अविश्वासी लोगों को यदि ब्रह्मा जी भी स्वयं आकर बोध करावें, तो वह उन के कहने को भी कदापि न मान सकेंगे।

नोट—सम्मति माला नं० १-२ में सैकड़ों सम्मतियाँ तथा चमत्कारी पत्र छप चुके हैं। अब नं० ३ सम्मति माला भी शीघ्र छपने वाली है। —लेखक

(१०५) बांस बरेली साहूकारा में मुझे बाबू श्री ललितकुमार

Scanned by CamScanner

जी वकील के मकान पर ठहरने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप श्रद्धालु भगवत भक्त हैं। आप की श्री गुरुदेव तथा संतों में भी पूर्ण श्रद्धा रहती है। आप सत्संग और भगवत् कीर्तन के कट्टर प्रेमी हैं। तभी तो इनके मकान पर भगवदार्चन पूजन एवं कीर्तन नियमपूर्वक हुआ करता है। डाक्टर राजनारायण जी के सुपुत्र विजयकिशोर जी (आप के भतीजे) का पत्र ता० २६-८-५४ को मेरे (लेखक) पास आया है। आप लिखते हैं कि मैं इन्ट्रेंस क्लास में फ़ेल हो गया था। श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट के सामने मैंने कुछ दिन तक प्रार्थना की तो उसके फलस्वरूप कुछ ही दिनों बाद जब दोबारा परीक्षाफल निकला तो मैं द्वितीय श्रेणी में पास हो गया। तब मैंने वकील साहब के मकान पर कीर्तन करा कर श्री सिद्धकिशोरी जी को कुछ भोग लगा प्रसाद प्रेमीजनों में बाँट दिया। श्री किशोरी जी का चित्रपट देकर आपने मेरी ज़िंदगी ही बना दी, आपके इस उपकार को कभी नहीं भूल सकता।

(१०६) नजीबाबाद (बिजनौर) से ता० १६-७-५४ को डाक्टर हरासिंह साहणी (पंजाबी सरदार) Ex. I.M.D. मुझे (लेखक को) पत्र द्वारा लिखते हैं, कि आप से प्राप्त हुये श्री सिद्धकिशोरी जी के चित्रपट को मैंने अपने जीवन का आधार बना कर उसको अपनी पूजा में रख लिया था। हर रोज़ जी-भर कर धूप-दीप करके भोग लगाते हुये उनका शुभदर्शन कर मन को निहाल कर लिया करता हूँ। क्या कहूँ उनका फ़ोटो तो इस कलियुग में भी जादू से बढ़कर असर दिखा रहा है। पहिले मेरी दुकान का काम कुछ मन्दा पड़ गया था, मगर अब अच्छी तरह से चलने लगा है। और जिस होटल में दो ढ़ाई साल से मैं खाना खा रहा था, श्री सिद्धकिशोरी जी का चित्र-पट पाने के बाद जब मैं वहाँ खाने जाता तो मुझे भारी नफ़रत

Scanned by CamScanner

होती, तो वापस लौट आता। मुझे तीन दिन तक बराबर इसहाल (दस्त) भी होते रहे जो बिना कोई दवाई खाये खुद बखुद ठीक हो गये। तब से श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा और प्रेरणा द्वारा मैं अपने ही हाथों से खाना बनाया करता हूँ। होटल को बिल्कुल छोड़ दिया गया है, नफ़रत हो गई है। मांस बनाने, बेचने तथा पकाने वालों से भी नफ़रत (घृणा) हो गई है, इसलिए सबसे बिल्कुल नाता भी तोड़ दिया है। यह सब आप की और आपकी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी की अति कृपा का फल है कि मुझ जैसे पापी को भी गन्दे गढ़े से निकाल कर अपने चरणों का दास बना लिया है। मैं अपने इस समय के सुख का उसी तरह से वर्णन नहीं कर संकता जिस प्रकार कोई गूँगा मनुष्य मिठाई के स्वाद का कथन नहीं कर सकता; आपके धन्यवाद प्रकट करने के लिए मेरे पास कोई शब्द ही नहीं है।

(१०७) देहली राजेन्द्रनगर से ता० २४/७/५४ कोई पहला पत्र और २०/१०/५४ को दूसरा पत्र स्वर्गीय श्रीमान श्री गिरधारी लाल जी के सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी, लछमन जी ने मेरे नाम से भेजे हैं जिनका आशय यह है। देहली में पधार कर आप ने जो श्री सिद्धकिशोरी जी के कुछ चमत्कारी चरित्रों को सुनाया था। उनके सुनते मात्र ही हमारे पूज्य पिता ज़ी के मन में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास उत्पन्न हो गया था कि जो लीलास्वरूप इतने सिद्ध थे तब तो उनका चित्रपट फ़ोटो) भी सिद्ध होगा। हमारे पिता जी की उत्कट अभिलाषा पर आप ने जो उनको फ़ोटो दिया था, पिता जी ने उसको अपनी पूजा में रख लिया और रात-दिन श्री सिद्धकिशोरी जी से प्रार्थना करने लगे कि अब हमको जल्दी इस फ़ानी जहान (नश्वर संसार) से उठा लो और अपने ही श्रीचरणों में बुला कर

Scanned by CamScanner

सेवा में रख लो। बस ! और इसी प्रकार प्रतिदिन इसी धुन में मग्न रहकर दुकान के काम और घर बार सब को भूल गये। उस समय उनकी तबियत बिल्कुल ठीक थी, इधर ता० ८ को आप यहाँ से गये उधर १६ जुलाई को पिता जी की तबियत कुछ खराब हुई तो श्री रामायण सुनने की इच्छा प्रकट की। एक महात्मा जी के द्वारा उनको जब श्री रामायण जी सुनाई गई तो बड़े प्रेम से सुनी। फिर श्री यमुना जी के स्नान की इच्छा भी प्रगट की, और रात्रि को श्री सीताराम जी का शुभनाम रटते-रटते प्रातःकाल ४ बजे श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम कृपा द्वारा आप की जो मनोकामना थी, साकेतलोक में श्री किशोरी जी के चरणों में पहुँच गये।

(१०८) देहली सब्जीमन्डी में दशहरा के मौके पर क्वार मास में हम लोगों की तरफ से भी कुछ दिन के लिये हर साल श्री रामलीला हुआ करती है वह इस साल भी बराबर हुई। लीला में हमारे पिता जी भी कुछ पार्ट (सम्वाद) किया करते थे, इस साल उनके न रहने पर लीला समाज के प्रवन्धकों को उनकी कमी महसूस हुई तो चिंतित हो कर विचार करने लगे कि अब इसकी पूर्ति कैसे और किस के द्वारा होगी ? इधर दूसरे ही दिन हमारे छोटे भाई श्री लक्ष्मणजी को श्री सिद्धकिशोरी जी की प्रेरणा होती है कि तुम ही अपने पिता जी की कमी को पूरा कर दो। यद्यपि लक्ष्मण जी पहिले कभी भी श्री रामलीला के स्टेज (रंगमंच) पर नहीं आये थे लेकिन श्री सिद्धकिशोरी जी की कृपा का क्या कहना कि भाई साहब ने पिता जी के सब सम्वादों की पूर्ति श्री किशोरी जी के बल भरोसे पर कर ही तो डाली, और जनता को बराबर यही भान हुआ कि श्री गिरधारीलाल जी ही पार्ट कर रहे हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए हम सब को पूर्ण विश्वास हो चुका है,

Scanned by CamScanner

कि यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की ही परम कृपा का फल है, वरना ऐसे-ऐसे अनुपम कार्यों की सिद्धि तथा पूर्ति का होना किसी भी मनुष्य की शक्ति से बाहर की बातें हैं।

अखण्ड कीर्तन का प्रभाव

(बिहौतीभवन श्री अयोध्या जी में अपूर्व चमत्कार)
श्री अयोध्या जी के विरक्त-पत्र अङ्क नं० २१
ता० १/६/१६५४ से उद्धृत।

(१०९) (माला का सुमेरु) भौतिक भारतीय पुराणवाद को नहीं मानते, उनकी आँखें खोलने के लिये एक आश्चर्य-कारी घटना का उल्लेख किया जाता है, जो इस प्रकार है :—

श्री अयोध्या जी में बिहौती भवन नामक एक स्थान है। यहाँ की उपासना भगवान श्री रामचन्द्र जी के दुलहा स्वरूप की है। यहाँ निरन्तर चार युगल सरकार (चार सरकार एवं चार महारानी स्वरूप) रहते हैं। प्रतिमास की हर पंचमी-छठी को यहाँ श्री राम विवाह एवं कलेवा उत्सव मनाया जाता है। इस स्थान के महन्त (पुजारी श्री रामशंकरशरण जी) अच्छे प्रसिद्ध महात्माओं में से हैं। "श्री सिद्धकिशोरी जी" जिन्होंने अपने अपूर्व अनोखे चमत्कारी चरित्रों द्वारा जनता को चकित कर दिया था वह इसी बिहौतीभवन के प्रधान स्वरूप थे।

सुप्रसिद्ध कीर्तनकार साकेतधामवासी अनन्त श्री रूपकला जी के परम स्नेही स्वर्गीय भक्तवर श्री रामाँजी महाराज की सुपुत्री श्रीमती रामकुमारीदेवी इसी स्थान में रह कर श्री अवधवास करती हैं। उन्होंने विगत १६/५/१६५४ को श्री सीताराम नाम का

Scanned by CamScanner

अष्टयाम कीर्तन किया, जिसमें दिन में तो स्त्रियों ने और रात में पुरुषों ने भाग लिया। इस कीर्तन में मंगलकलश की स्थापना की गई थी और गर्मी के मौसम का ख्याल करके दीपक न रख कर पुष्प ही रख दिये थे। रात्रि में मिट्टी के तेल की दो ढेबरियाँ जिनमें आधा-आधा तेल भरा था, अपने प्रकाश के लिये जलाकर ताखे पर रख दी गई थीं। लगभग रात्रि के दो बजे एक ढेबरी बुझ गई। ता० १७।५।५४ को प्रात:काल चार बजे देवी जी ने दूसरी ढेबरी भी बुझाकर मंडप में रख दी, और कीर्तन की समाप्ति कर प्रसाद वितरण करने के पश्चात् जिस कोठरी में विश्राम करती हैं उसमें चली गईं। उस मंडप में जहाँ कीर्तन हुआ था लगभग ८५ वर्ष की एक बुढ़िया भी रहती है। देवी जी के जाने के दस मिनट के बाद उसने दोनों ढेबरियोंको पुन: वहाँ जलते हुये देख कर अनुमान किया कि देवी जी ही जला कर चली गई होंगी। देवी जी रात भर जगी थीं, अत: वह प्रात:काल पाँच बजे जब सोकर उठीं तो देखा एक दीपक जल रहा है, और एक को बुझा कर बुढ़िया ने अपने पास रख लिया है। उक्त स्थान में जो दो चार व्यक्ति उस समय उपस्थित थे उनसे जाँच करके पूछा गया कि दीपक किसने जलाया ? तो सबने शपथ लेकर जलाने से इन्कार किया ! तब परीक्षा की गई कि देखें यह दीपक कब तक जलता है ? तो वह दीपक आँधी और तेज तूफ़ानी हवा में भी बराबर जलता ही रहा। यह खबर धीरे-धीरे फैल गई और बहुत से दर्शकों ने आकर उक्त घटना को प्रत्यक्ष देखा। अभी तक दीपक उक्त स्थान से हटाया नहीं गया है, प्रात: ७ बजे से ११ बजे तक व सायंकाल ५ बजे से रात्रि भर दीपक के दर्शन नित्य होते हैं, और स्त्रियाँ आ आकर पूजन करतीं और लाभ उठाती हैं, एक प्रत्यक्षदर्शी ज्येष्ठ कृष्ण ३ सं० २०११।

नोट:—यह चमत्कार पूरे ३ दिन तक रहा (लेखक)

Scanned by CamScanner

❀ निष्कर्ष ❀

सज्जनो देखिये! इस घोर कलिकाल में भी केवल पन्द्रह वर्ष के बालक (लीलास्वरूप) ने अपने अपूर्व, अलौकिक चमत्कार दिखला कर जनता को एक आश्चर्य में डाल दिया। इतनी छोटी अवस्था में ऐसे ज्ञान एवं सिद्ध चमत्कारों का होना क्या कोई साधारण बात है? किसी को उसका भविष्य बता देना तो किसी को साकेत भिजवा देना, किसी का घर धन-धान्य से भर देना, तो किसी के मनमाने मनोरथ ही पूर्ण कर देना, कहीं नितान्त बालक बन जाना, तो कहीं विद्वानों के से कार्य कर दिखाना। आप के अनेकों विचित्र चरित्र हैं जो कि वर्णनातीत हैं। बिना किसी शक्ति विशेष के ऐसे अपूर्व चमत्कारों का होना असम्भव एवं मनुष्य की शक्ति के बाहर की बातें हैं। इसलिये अन्त में यह मानना ही पड़ेगा कि आप कोई साधारण बालक न थे, बल्कि कोई अलौकिक अवतारी महान् आत्मा ही थे। महापुरुषों के स्वरूपों को पहचानना बड़ा कठिन है। वे किस रूप में कहाँ रहते हैं, और क्या करते हैं, इसको कोई नहीं जानता। किसी में यदि शक्ति का विशेष रूप में प्राकट्य होता है तो किसी में कम। मैंने अपनी बाल्यावस्था से लेकर आज तक सैकड़ों लीला बिहारी स्वरूपों के शुभदर्शन किये। परन्तु उनमें से आठ-दस स्वरूपों में तो कई चमत्कार एवं सिद्धियाँ भी दूसरों से कुछ अधिक देखने में आईं। परन्तु इन सब में प्रधानता तो श्री सिद्धकिशोरी जू की ही रही, जिन्होंने अपने अनेकों अनोखे-अलौकिक चमत्कारों द्वारा प्रेमी समाज को कृतकृत्य कर दिया था। और यह भी देखने में आया, कि उपरोक्त आठ-दस

Scanned by CamScanner

चमत्कारी स्वरूपों में से कोई भी लीलास्वरूप पन्द्रह, सोलह और सत्रह वर्षकी आयुके पश्चात् इस संसार में प्रकट रूप से न रह कर कोई तो साकेतधाम को एवं कोई २ गोलोकधाम को पधार गये।

यद्यपि संसारी लोगों को वे जन्म लेते एवं शरीर त्यागते ही दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु यदि वास्तव में देखा जाय तो वह जन्म-मरण से रहित सदा जीवन मुक्त होते हुये भी केवल जगत के कल्याण एवं उपकारार्थ ही इस संसार में आया-जाया करते हैं। उनको संसारी लोगों के सदृश जन्म-मरण का कोई कष्ट नहीं व्यापता, मगर हाँ! संसारी लोगों के लिये तो कर्म का कानून अटल है, वह जैसा करते हैं वैसा उसका फल भी भोगते हैं।

सज्जनो! इन्हीं श्री सिद्धकिशोरी जी की बीमारी के अन्त समय तक बहुत से प्रेमीजनों ने कई प्रकार के अनुष्ठान, जाप, पूजा, पाठ, व्रतादि स्वयं किये और दूसरों से भी कराये। उन सब प्रेमियों की परमाभिलाषा थी, कि ऐसे विलक्षण चमत्कारी लीलास्वरूप अभी इस पृथ्वीतल पर कुछ काल और भी निवास करें तो अच्छा, जिससे हम जैसे पामर जीवों का कल्याण हो। परन्तु यह भी तो उन्हीं की इच्छा एवं उन्हीं की लीला थी। खुशी हुई तो इतनी कि अनन्त श्री किशोरी जी ने एक अनुपम लीला आदर्श दिखला कर दर्शकों को तो सचेत किया एवं समस्त लीला मंडलियों को भी गौरव प्रदान करती हुई श्री साकेतधाम को लौट गईं। और दुःख है तो इतना, कि यदि कुछ काल तक वह और भी यहाँ रह जातीं, तो न जाने कितने लोगों का हित और कल्याण होता। हम लोगों से पृथक होने पर हमारी दयासागरी जू आज भी हमारे समीप आस-पास में ही तो गुप्तरूप से खेल कर रहीं हैं। आपने दृश्य जीवन में तो अनन्त जीवों पर अनुग्रह कर उनका उद्धार किया,

Scanned by CamScanner

अब अदृश्य रूप से भी वह न जाने कितने जीवों का कल्याण कर उन्हें धन्य कर रही हैं।

कई प्रेमियों ने अनेक स्वरूपों के शुभदर्शन किये, एक से एक सुन्दर, एक से एक भावुक और चमत्कारी। किन्तु ऐसे चमत्कारी, सुशील, शान्त, ऐसे भावुक, श्रद्धालु स्वरूप नहीं देखने में आये, इनमें तो अनन्त गुण थे, प्रेमीलोग आज भी उनके वर्णन करते थकते नहीं। वैसे तो उनकी स्मृति जीवन भर बनी रहेगी, वह कभी भूल थोड़े ही सकती है। उनकी मधुर मुस्कान एवं ध्वनि आज भी कानों में सुनाई देती हुई उनकी स्मृति को ताजा बना रही है। आपका सदाचार, आपकी निर्मल कीर्ति, आप का उदार, दयालु, सरल-स्वभाव गरीबों की सेवा, अति मधुर भाषण, आपकी भोली-भाली रंगीली-झाँकी के साथ-साथ अधरों की मन्द-मन्द मुस्कान आज भी प्रेमीजनों के हृदय पटल पर अविचल आसन जमाये आँखों में झूल रही है। आप की धवल कीर्ति का इस निर्जीव लेखनी द्वारा उल्लेख करना शक्ति के बाहर है।

यह तो केवल प्रेमी भक्तजनों के सञ्चित शुभ कर्मों का फल ही था, जो ऐसे अलौकिक चमत्कारी लीलास्वरूप ने आकर हम सोते हुये सब लोगों को फिर से जगा कर सचेत कर दिया। यदि ऐसा न होता तो लीलाधारियों एवं उनके दर्शकों में कुछ शिथिलता जरूर आने लग जाती। काल के प्रभाव से इधर लोगों की श्रद्धा कुछ कम होने लगी थी, हो सकता था कुछ प्रेमी निराश होकर इस मार्ग से पृथक भी हो जाते।

वास्तव में श्री रामलीला, श्री कृष्णलीला, श्री भक्तलीला, एवं श्री युगल झाँकी मण्डलियों द्वारा कई दर्शक लोग मुग्ध एवं मोहित होकर उनके कट्टर भक्त भी बन गये। क्यों न हो।

Scanned by CamScanner

भगवान तो अपने लीलानुकरण से आकर्षित होकर ऐसे रीझते हैं कि स्वयं तत्काल ही प्रकट हो जाते हैं जैसा कि श्री रास-पञ्चाध्याई में बृजगोपिकाओं को भगवान ने उनकी रहसलीला करने पर ही स्वयं उनको दर्शन दिया था। इसका एकमात्र कारण यही है कि भगवत् लीलानुकरण में केवल ब्राह्मणों के सुपात्र सुन्दर ब्रह्मचारी बालकों को ही तो स्वरूप बनाया जाता है। उनके किरीट, मुकुट एवं वस्त्रालंकार भी साक्षात् भगवान के से ही बनाये जाते हैं। इसलिये जो मनुष्य निर्मल चित्त से श्रद्धा-विश्वासयुक्त होकर ऐसे लीलास्वरूपों में भगवान का ही ध्यान करते हैं, भगवान समझ कर ही उनकी सेवा करते हैं, तो उनकी भावनानुसार उन्हें मनोरथों की सिद्धि एवं मोक्ष की प्राप्ति क्यों न होगी ?

"जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।"

सज्जनो ! लीलाविहारी स्वरूप आवेशावतार माने गये हैं और यह नियम है कि हरएक मनुष्य अपने विश्वास तथा भावना के अनुरूप ही अपने मनवांछित फलों को प्राप्त करता है। मनुष्य का विश्वास ही मुख्य साधन है। जो शुभ विश्वास हुआ तो उत्तम गति को पा लिया, और जो अशुभ हुआ तो बुरी गति को। अर्थात् शुभ भावना वाला तो भगवान का दर्शन करता है और अशुभ भावना वाला नर्क का।

मैं तो अपना अनुभव कहूँगा कि इस कलिकाल में भगवान के नाम, रूप, लीला, धाम से बढ़ कर मन को एकाग्र करने के निमित्त दूसरे कोई सुलभ और निरापद साधन नहीं हैं। इसलिये जो कोई दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धा युक्त होकर लीलाविहारी स्वरूपों का दर्शन, उनकी सेवा एवं उनके चरित्रों का ही श्रवण मनन करता है तो उसके हृदय की समस्त कालिमा धुल कर

Scanned by CamScanner

हृदय शीघ्र निर्मल हो जाता है ! तभी तो श्री लीलाबिहारी सरकार भी अवश्य उसका उद्धार कर देते हैं, भले ही वह ऊँच हो या नीच, पंडित हो या मूर्ख, राजा हो या रंक, परन्तु होना चाहिए भावुक !

देखिये ! स्वयं श्री भगवान का ही कथन है कि "ब्राह्मण बालक मेरा ही स्वरूप है। सत्यब्राह्मण मेरे ही मुख से उत्पन्न हुये हैं, इसलिये मेरे मुख के पुत्र हैं। पिता को स्वयं खाने में उतनी प्रसन्नता नहीं होती जितनी पुत्र को खिलाने से होती है। उसी प्रकार ब्राह्मण बालक को खिलाने से मेरा मुख संतुष्ट हो जाता है। इसलिये सुन्दर मोहन भोग, अथवा और भी कोई स्वादिष्ट भोग पदार्थ फल फूल मेवा इत्यादि कोई प्रेमीभक्त श्री लीला-बिहारीस्वरूपों के मुख में देता है तब तो मेरी प्रसन्नता का कहना ही क्या? मेरा मुख खिल कर विकसित हो जाता है, और उस प्रेमीभक्त के सब मनोरथों को मैं ही उसी लीलास्वरूप द्वारा पूरा कर देता हूँ। बस ! जिस किसी ने भी श्री लीलाबिहारी स्वरूपों का आश्रय ग्रहण कर लिया तब उसे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों में से फिर कौन सी वस्तु दुर्लभ है? सज्जनो ! यह सब चीजें तो भगवान अपने प्रेमीभक्तों को बिना माँगे ही स्वयं दे देते हैं, तभी तो निष्काम भक्ति को ही सब से श्रेष्ठ माना गया है !

श्री सिद्धकिशोरी जी इस लोक से चली गईं, उनकी कथा मात्र शेष रह गई,तो भी उनकी स्नेहमयी, पुण्यमयीप्रतिमा प्रतीक आज भी प्रेमीजनों के हृदय में विराजमान है। साल पर साल व्यतीत हो चुके इधर काल के प्रभाव से कितनी तरह के भले बुरे परिवर्तन भी हो गये, परन्तु तो भी श्री सिद्धकिशोरी जी का शुभ नाम उसी प्रकार सब जगह गौरव से ही लिया जाता है और लिया जायेगा। श्री लीलाबिहारी स्वरूपों की महिमा प्रत्येक

Scanned by CamScanner

प्रेमीजनों को विदित ही है, ऐसे-ऐसे श्री लीला स्वरूप तो प्रेमीभक्तों की पूजा की सामिग्री हुआ करते हैं, जिनको वह अपने हृदय से एक पल के लिये भी पृथक नहीं कर सकते।

पाठको! जब तक इस पवित्र भारतभूमि में एक भी भगवत् लीला प्रेमी रहेगा, तब तक श्री "सिद्धकिशोरी जी" का शुभ नाम भी अमर बना रहेगा। एवं जिस दिन आप के समान चमत्कारी लीला-स्वरूप इस भारतवर्ष में प्रकट हो जायेंगे, उस दिन तो समस्त दुख दावानल शान्त होकर अनाथों की डूबती हुई नैया भी किनारे लग जायगी।

❀ श्री जनकनन्दिनी जू की कृपा ❀

वात्सल्य तथा शील स्वभाव

इस संसार के लम्बे चौड़े इतिहास में त्रिलोकी के विशाल वक्षस्थल पर न जाने कितनी सती आर्या महिलायें हुईं। और उनकी महिमा जब तक सूर्य चन्द्रमा रहेंगे, गाई जाती रहेंगी। परन्तु सती गौरव श्री अवध राजधानी की महारानी श्री जनकनन्दिनी जू की महिमा अत्यन्त विलक्षण है, क्या विलक्षणता है?

(१) सती दमयन्ती को एक लकड़हारे ने बुरी दृष्टि से देखा तो उन्होंने अपने सत की अग्नि से उसे भस्म ही कर डाला।

(२) सती शांडिलिनी को गरुड़ जी योग्य समझकर भगवान की प्रसन्नता के लिये बड़े आदर से वैकुंठ में ले जाना चाहते थे, तो उस देवी ने अपने सत्य के बल से उनके शरीर तक को गला दिया।

(३) सती शिरोमणि श्री जनक नन्दिनी क्षमा रुपिणी पृथ्वी की पुत्री हैं। पृथ्वी का सार अथवा सत रूप होने के कारण वह पृथ्वी से भी कोटि गुणा अधिक क्षमाशील हैं। यद्यपि उनका

Scanned by CamScanner

सत्य, दमयन्ती, शांडिलिनी, लक्ष्मी आदि से भी कोटि गुणा अधिक है, तो भी उन्होंने अपने सत् की आग से रावण जैसे महान दुष्ट राक्षस को भी नहीं जलाया बल्कि वे बोलीं, हे पुत्र ! मैं सब की माँ हूँ, तुम्हारी भी माँ हूँ, इसलिये तुम्हारा मुझ पर कुदृष्टि करना उचित नहीं है। मैं अपने सत् के बल से तुम्हें जलाकर खाक कर सकती हूँ, परन्तु इसमें भी तो मुझे ही दुख होगा इसलिये बेटा ! सोच समझ कर सपूत बनो, मूर्खता को त्याग दो।

अशोक वाटिका में राक्षसियों का उपद्रव देखकर हनुमान जी ने श्री स्वामिनी जी से आज्ञा माँगी कि इन्हें मार डालूँ ? इस पर श्री किशोरी जू राक्षसियों के सिर पर अपना वरद हस्तकमल रखते हुये श्री हनुमान जी से बोलीं, पुत्र ऐसा मत कहो; यह बिचारी तो अपने स्वामी (रावण) की आज्ञा का पालन कर रही हैं, इसमें इनका क्या दोष है। श्रेष्ठ पुरुष तो बड़े से बड़े अपराधी को भी क्षमा ही करते हैं। संसार में सभी अपराधी हैं, किस-किस पर दृष्टि डाली जाये, इसलिये बेटा हनुमान ! अपने हृदय में दुर्गुण नहीं आना चाहिये ! परम शीतल श्री मिथिलेशदुलारी शीलस्वभावा जू के मधुर वचनों को सुन कर श्री हनुमान जी का हृदय आदर, श्रद्धा, विनय, प्रेम एवं आनन्द से भर कर गद्‌गद् होने लगा; और उनके श्री चरणों में गिर पड़े।

मन्दोदरी युद्ध में अपने पुत्र मेघनाद का वध सुन, क्रोध से भरी, महाराज श्री रामचन्द्र जी को कुछ अपशब्द बकती, अशोक वन की तरफ आई। उनको शाप देने जा ही रही थी, कि सर्मा (विभीषण की स्त्री) के मुख से सब समाचार सुन कर श्री किशोरी जी मन्दोदरी के समीप पहुँच, धरती पर घुटने टेक, हाथ जोड़, बड़ी नम्रता से बोलीं माँ ! अपने पुत्र के प्रति माता की कितनी ममता होती है, यह मैं

Scanned by CamScanner

जानती हूँ, परन्तु तुम्हारे दुख का कारण श्री राम जी नहीं हैं। सारे अनर्थों की जड़ तो मैं ही हूँ। तुम उनके लिये कुछ न कहो माँ! किन्तु अपनी क्रोधाग्नि से मुझे ही दंड देकर अपने हृदय की व्यथा को शान्त कर लो! बस! फिर क्या था, श्री स्वामिनी जी का शीतल हृदय एवं दैन्ययुक्त मुखमंडल देखकर उनके करुण, सत्य एवं मधुर वचन सुन कर मन्दोदरी का हृदय भी शान्त एवं शीतल हो गया। श्री स्वामिनी जी को हृदय से लगा कर बोलीं! हाँ! तुम्हारे इस शील एवं शीतल स्वभाव पर मेघनाद जैसे लाखों पुत्र कुर्बान हैं, बलिहार हैं, न्योछावर हैं। पुत्री तुम्हारा सोहाग अचल हो और तुम अपने स्वामी से मिलकर सुखी रहो! सज्जनो! श्री अयोध्या महारानी जू के शील स्वभाव का वर्णन कहाँ तक किया जाय। वह आकाश से अधिक अनंत, समुद्र से अधिक गम्भीर, अमृत से अधिक मधुर, और मधुरता से अधिक प्यारी एवं कोटि चन्द्र से अधिक निर्मल और शीतल भी हैं।

जिस समय जयन्त (कौवे के भेष में) श्री किशोरी जी पर पञ्जे और चोंच का प्रहार करके भागा था, और भगवान श्री राम जी के सींक बाण के भय से मृत्युलोक में कहीं भी शरण न मिलने पर घबराता, काँपता, श्री नारद जी के उपदेश से फिर वहाँ आया, और श्री रामचन्द्र जी महाराज के चरणों के पास गिर पड़ा, उस समय भी उसका मुख श्री राम जी के विपरीत एवं पीठ उनके सामने हो गई थी। तब भी श्री स्वामिनी जी ने कृपापूर्ण हृदय से महाराज श्री रामचन्द्र जी की नजर बचा कर अर्थात् उनकी दृष्टि पड़ने से पहिले ही झट उसको विमुख से सम्मुख कर दिया, अर्थात् अपने ही करकमलों द्वारा उसका मुख श्री राम जी की तरफ़ फेर दिया।

पाठको! अब बतलाइये तो सही, कि दैन्यवत्सला जगदम्बा

Scanned by CamScanner

महारानी श्री जनकनन्दिनी जू के सिवाय दुष्टों पर भी ऐसी कृपा एवं दया भला कर ही कौन सकता है। बहिन मेरी प्यारी लाड़िली बहिन ! हम आप के गुणों का वर्णन कहाँ तक करें। आप के गुण, नाम एवं रूप अनन्त हैं, आप की लीला भी अनन्त अपार है जिसका न कोई पारावार है, जो हमारी बुद्धि से भी अगम है। तभी तो आपको वेदों ने भी नेति-नेति कह कर पुकारा है।

❀ अन्तिम प्रार्थना ❀

अब मैं भइया लक्ष्मीनिधि अन्त में श्री युगल सरकार अनन्त श्री सीताराम जू महाराज के शुभनाम की छाप लगाकर इस पुनीत जीवन चरित्र को, जो कि एक अनमोल रत्न है, और जिसके श्रवण मात्र से जीवों का अन्तःकरण शुद्ध एवं मन पवित्र होकर चित्त भगवत चरणों की ओर आकर्षित होता है, यहाँ विश्राम देता हुआ अपने प्रिय बहनोई श्री अवधेश राजकुमार परम रस विग्रह श्री राघवेन्द्र जू महाराज एवं अपनी प्यारी लाड़ली बहिन श्री मिथिलेश राजदुलारी श्री सिद्धकिशोरी जू के कमल रूपी चरणों में बारम्बार सादर सप्रेम दण्डवत्, जोहार, प्रणाम करते हुये नम्रनिवेदन करता हूँ कि आप सर्वेश्वर की स्वामिनी होने पर भी कृपा एवं ममतावश शरणार्थियों की रुचि रक्खा करती हैं। इसलिये आप अपने जीवों के हृदय में पुनीत प्रेम की धारा बहाकर अपनी करुणा एवं स्नेहमयी गोदी में उनको बैठाने की कृपा करेंगी। कारण कि आप की दृष्टि में तो कोई अपराधी है ही नहीं, सभी अपना २ कर्मफल भोगते हैं, इसलिये करुणा के पात्र हैं। आहा धन्य ! कितनी उदारता, कृपा, दया एवं कितनी भारी करुणा है हमारी लाड़ली श्री किशोरी जू के करुणामयी हृदय में। प्रिय बहिन, आप तो अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष के भी देने वाली हैं। जो भी दीन-

Scanned by CamScanner

दुखी आपकी शरण में गया, बस उसका तो बेड़ा ही पार हो गया अर्थात् सब विपत्तियों से छूट कर आनन्द सागर में ही निमग्न हो गया। भूले-भटके संसारी जीवों को प्रभु श्री राम जी के समीप पहुँचाने का मार्ग "श्री सम्प्रदाय" आपने तो पहले से ही खोल रक्खा है न।

बहिन! आपके रूप अनन्त हैं, आप नित्य लीलाविहार करती हुई भी हमारे समीप अवश्य हैं। आप कहीं भी क्यों न हों, मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार आप मुझे अपना भैया मान कर सदा मेरी देख-रेख एवं रक्षा करती आई हैं, भविष्य में भी उसी प्रकार करती रहेंगी। मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि अपने श्री चरणों से लगा कर आपने मुझे जिस मार्ग पर अग्रसर किया है मेरी जीवन यात्रा उसी मार्ग से पूर्ण हो जाये। और अन्त में बहिन! भुजा पकड़ कर मुझे अपने श्री चरणों में बिठा लेना, कहीं ऐसा न हो कि भैया को फिर चौरासी के चक्कर में पड़ कर्म घास के बोझे सिर पर लादने पड़ें। प्रिय बहिन! इस समय संसारी जीव भी महान दु:ख के सागर में पड़े-पड़े गोते खा रहे हैं, इसलिये अब अपनी उन समस्त बिलखती-तड़पती आत्माओं को भी अपना कर रख लें अपनी चरण-शरण में। कारण कि उनकी दारुण वेदनायें सीमा का उल्लंघन कर चुकी हैं।

परम प्रिय बहनोई श्री राम जी से भी मेरी अन्तिम एक प्रार्थना है, आशा है कि आप मुझे निराश न करेंगे। मैं आप के दर्शनों से वंचित रहने के कारण आवागमन की कठिन से कठिन चक्की में पिसा, अनेक योनियों तथा नरकों के महान् कष्ट भोगे, मायादेवी ने भी खूब नाच नचाया, दरबदर भटकाया। यह तो केवल श्री सिद्धकिशोरी जी तथा आप की ही करुणा एवं कृपा का मधुर परिणाम है कि मैं अनेक दुखों का सामना करता

Scanned by CamScanner

हुआ संसार के कीचड़ (दलदल) में से निकल श्री युगल सरकार की चरण शरण में पहुँच आप का साला तथा श्री किशोरी जी का भइया कहलाने का सौभाग्य एवं गौरव प्राप्त कर सका। देखिये पाहुन। हमारी बहिन श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार अपनी शरण में बुला ही तो लिया, मैं १२ वर्ष से आनन्दपूर्वक उन्हीं की छत्रछाया में रहकर श्री जानकीघाट महल में निवास कर रहा हूँ। अब आप दर्शन देने तथा अपने श्री साकेतलोक में ले जाने से संकोच क्यों कर रहे हैं। क्या मेरी किसी भारी खता से रूठे हैं? "तेरी नज़रों में नज़राना मेरा दिल, बहनोई तेरे ही हाथ बिकाना मेरा दिल।" इसमें जरा भी शक नहीं, किंचित मात्र भी संदेह नहीं, आप मुझ से निस्संदेह मिलेंगे परन्तु जब मिलना ही है तो देर क्यों लगाते हो, इतना क्यों तरसाते और सताते हो, और यदि कहो कि कुछ देर है तो क्यों? फिर यह सार-बहनोई का नाता ही कैसा? और अगर मेरे प्रेम में कमी है तो इसे पूरा क्यों नहीं करते, प्रेम के अधूरे प्याले को पूरा क्यों नहीं भरते? प्यारे! आपकी छविसुधा के लोचन प्यासे हो रहे हैं।

छिपी वह कहाँ मधुर मुस्कान ।।

तरस रहीं फिर "सार" की अखियाँ सुखसागर दया निधान।
आकुल नैन बिलोकत चहुँ दिशि, पीताम्बर फहिरान।
वै नहीं दीसत पीताम्बर धर, क्षण-क्षण तलफत प्राण।
नासामणि की हलन न भूलत, नैनन की वह सान।
कहा कहूँ मन खैंच लियो है, "पाहुँन" प्रेम निधान।
अब न सताओ सुरत करो, निज जन प्रतिपालन बाणि।
निमिष निमिष है युग सम बीतत, देओ दर्श को दान।

बहनोई! अब अपनी नटखट माया का परदा हटा, अपना सलोना, मनमोहना मुखड़ा दिखला मुझे अपने ही साथ-साथ शीघ्र साकेतधाम में ले चलें।

कृपा करो रसाई दो सजन, अपने चरणों में।
बुरा भला "सार" जैसा भी है, तुम्हारा है।

अब मेरी सादर करबद्ध प्रार्थना है, आप भी आशीर्वाद दें कि आप के सम्पूर्ण राज्य में धार्मिक भावों की वृद्धि होकर नास्तिकवाद का नाश हो। समस्त प्रजा सुधर्मनिष्ठ तथा प्रेम परायण होकर श्री सिद्धकिशोरी जी के इस पुनीत जीवन चरित्र को पढ़ सुनकर आपके चारुचरित्रों का अनुकरण कर सकें।

श्री सीतारामचंद्राय नमः श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु।
श्री युगल सरकार श्री सीताराम जी महाराज की जय।
श्री माण्डवी भरतलाल जी की जय।
श्री उर्मिला-लखनलाल जी की जय।
श्रीश्रुतिकीर्ति शत्रुघ्नलाल जी की जय।
श्री लवकुश भाँजों की जय।
श्री चन्द्रकला चारु शीला की जय।
श्री हनुमतलाल जी की जय।
श्री गुरु महाराज की जय।

श्री मिथिला मानसर की कुमुदिनी, कोटि चन्द्र एवं चन्द्रमाँ से भी शीतल उजियारी सुकुमारी, श्री मिथिलेश राजकुमारी बहिन,
श्री सिद्धकिशोरी जी की दया का भिक्षुक

आपका ही भइया,
लक्ष्मीनिधि

इति शुभम !

Scanned by CamScanner

श्री सिद्ध-किशोरीजी

Scanned by CamScanner

श्री सिद्ध-किशोरीजी

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

श्री युगल सरकार के श्री चरणों में, अनन्त श्री रामशंकरशरण जी

Scanned by CamScanner

श्री श्री १०८ श्री अलबेला बाबा

Scanned by CamScanner
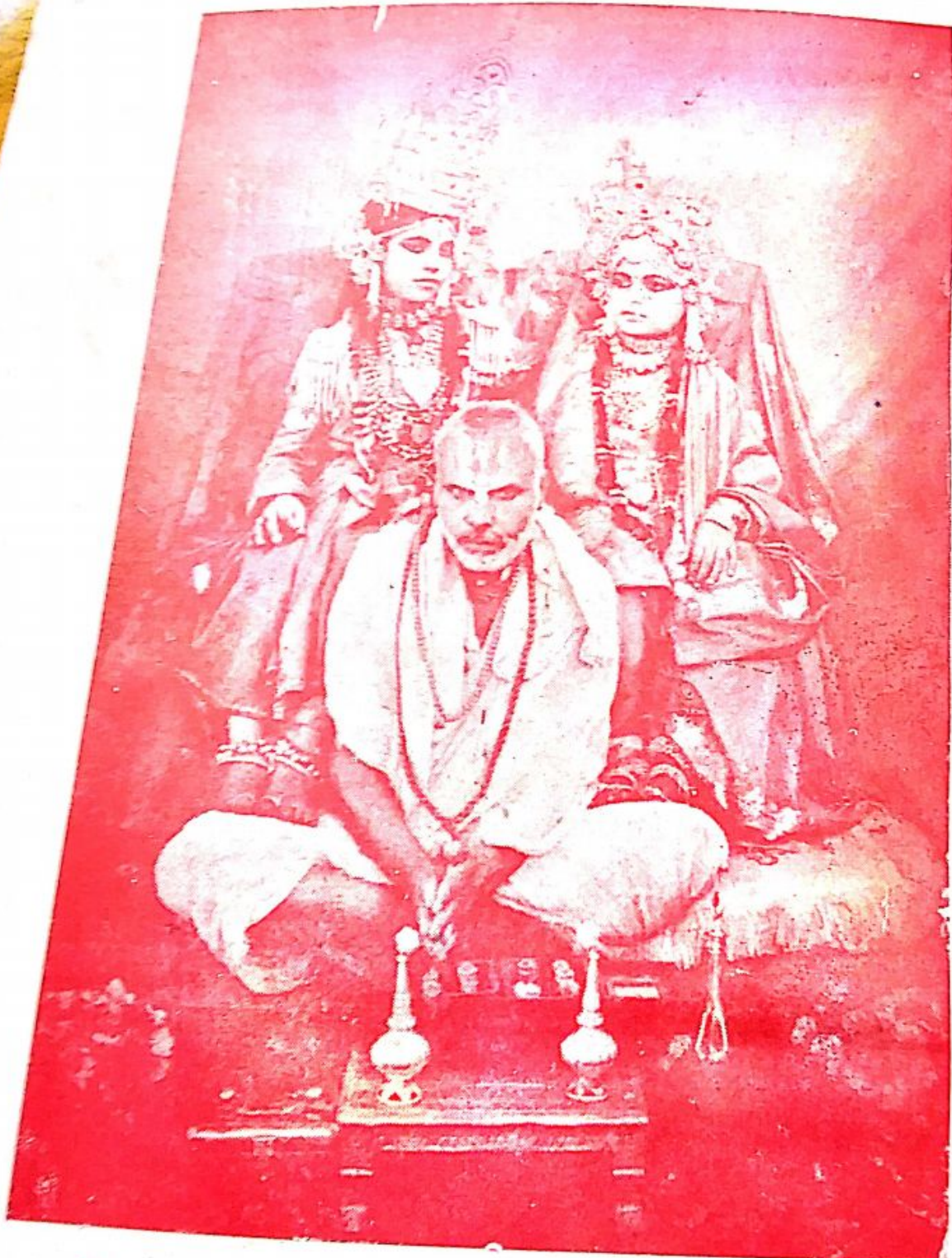
श्री युगल सरकार के श्री चरणों में, अनन्त श्री रामशंकरशरण जी महाराज (श्री पुजारीजी)

Scanned by CamScanner

श्री श्री १०८ श्री बैजनाथशरण जी महाराज

Scanned by CamScanner